- तृतीय अध्याय -

उपेन्द्रनाथ अश्क की प्रातिनिधिक कहानियों में चित्रित नारी जीवन

प्राचीन काल से भारतीय साहित्य का नारी से अंतरंग संबंध रहा। साहित्य की विविध विधाओं के द्वारा उसे अभिव्यक्त किया गया। लेकिन अन्य विधाओं की अपेक्षा कथा साहित्य का नारी जीवन से अधिक निकटतम संबंध रहा। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में नारी जीवन की विभिन्न झांकियां दिखायी देती हैं। उसमें नारी जीवन की गरिमा के साथ साथ उसकी दयनीयता, उपेक्षा, हीनता, विवशता, दासता, लाचारी, दु:ख, यौन समस्या तथा पीडाओं से भरा नारी जीवन अभिव्यक्त है। प्रेम, विवाह, वैधव्य, वेश्या, बांझपन, अनैतिकता, बलात्कार, नारी-शोषण आदि नारी जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण किया गया है। उसके साथ ही नारी जीवन के गरिमामय पक्ष का भी उद्घाटन किया गया है। जिसमें त्याग, निष्ठा, कर्मठता, सहनशीलता, सेवापरायणता आदि सहज भावनाओं का अंकन किया है, तो दूसरी ओर उसकी ईर्ष्या, विद्रोह, मत्सर का भी वर्णन किया गया है।

१. नारी जीवन के विविध आयाम :

भारतीय नारी एक साथ अनेक रूपों में हमारे सामने आती है। एक साथ ही वह माता, पत्नी और कामकाजी स्त्री है। पुरुष की तुलना में उसकी ये भूमिकाएं उस पर आरोपित है। पितृसत्ताक परिवार में उसका व्यक्तित्व दब-सा गया है। सामाजिक दृष्टि से वह गौण स्थान पर ही कल थी और आज भी है।

हिन्दी कहानियों मे चित्रित नारी को जब हम देखते है, तब उसे बेबस और लाचार ही पाते है। परंपरा से चले आए हुए बन्धनों में ही अपने आपको सीमित करनेवाली नारी को ही प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। उसके चरित्र के प्रति समाज गर्व महसूस करता है। उसके मनोभावों की अपेक्षा उसके सती रूप और दैहिक पवित्रता की दृष्टि से ही उसकी पवित्रता तथा मूल्य निश्चित किया जाता है।

क) पुत्र का महत्व – नारी का दुर्भाग्य

नारी को दोयम स्थान पर आसीन करने में भारतीय व्यवस्था अधिक उत्तरदायी है, जिसकी जडें हम हमारी परंपरा में देख सकते हैं। भूतपूर्व काल में जब कि पारिवारिक स्थैर्य प्राप्त हुआ, तब प्राप्त संपत्ति का मालिक पुरुष बन गया और विरासता का सम्मान पुत्र को प्राप्त हुआ। तभी से पुत्र जन्मोत्सव पर उत्सव और पुत्री जन्म को संकट माना जाने लगा। भारतीय संस्कृति विरासत के लिए पुत्र प्राप्ति को बहुत महत्व देती है। पुत्र माता के लिए सौभाग्य के दिये हुए चरम आनंद का एक भाव है, तो कन्या परिवार की भावी काल की आपत्ति तथा कर्ज है। पुत्र जन्म से पूरे परिवार में एक प्रकार के आनंद की लहर आ जाती है, तो कन्या जन्म पर निराशा, निरुत्साह और उदासी भर जाती है। पुत्र कामना की अतीव महत्ता ने लड़कियों को माँ-बाप की उपेक्षा और उपहास का पात्र बनाया। इन कारणों से लड़कियां अंदर ही अंदर खून का घूंट पीकर रह जाती हैं। अगर पहली पत्नी से पुत्र प्राप्ति नहीं होती, तो दूसरी शादी की जाती है। क्यों कि पुत्र प्राप्ति में मोक्ष प्रप्ति का आभास मिलता है। इसी कारण नारी के लिए पुत्रवती होना गौरवशाली बात है, नहीं तो सामाजिक आदर-सत्कार, सम्मान से उसे वंचित ही रखा जाता है।

ख) मातृत्व-हीनता

संतान विरहित नारी को भारतीय समाज में ज़िन्दगी से बेजार होना पडता है। परिवार में घटित होनेवाली अनिष्टता के कारण उसे अपमानित होना पडता है। क्यों कि मातृत्व स्त्री का सबसे बडा धर्म माना गया है। दुनिया में उसी स्त्री का जीवन सार्थक माना जाता है, जो माँ है। इसके बाहर जीवन एक छल है, एक पाप है।

भारतीय समाज में बांझपन नारी के लिए घातक है। पर कभी-कभी पती की पौरुषहीनता पत्नी पर लादकर उसे बांझपन के नाम पर नाहक ही प्रताडित किया जाता

है। समाज की यह गलत धारणा है कि नारी ही बांझ होती है, पुरुष नहीं। इस में नारी के प्रति हीनत्वभाव स्पष्ट होता है। पति की पौरुषहीनता को पत्नी के बांझपन के नाम पर छिपाने का प्रयास किया जाता है।

ग) वर पक्ष की प्रधानता

विवाह के क्षेत्र में वर पक्ष की प्रधानता प्राचीन काल से मानी गयी है। जमाई का मानसिक रोब हमेशा वधू पक्ष पर छाया रहता है। जमाई को दसवां ग्रह मानकर उसका मूल्य बढ़ाया गया है। ससुराल के सारे शारीरिक और मानसिक अत्याचार सहने में ही नारी का भूषण माना गया है। उसके जीवन की इतिश्री गृहिणी रुप में ही मानी जाती है। इससे मुक्ति पाने के लिए वह अपने मैके वापस नहीं जा सकती। सास, ससुर, पति, देवर, ननंद आदि लोगों के इशारों पर चलना ही उसके जीवन का एकमात्र ध्येय रह जाता है। पितृ-सत्ताक कुटुंब पद्धति का यही नतीजा है। मर्यादापूर्ण भारतीय संस्कृति ने नारी जीवन के सामर्थ्य का हनन किया है। पारिवारिक नैतिकता के ये परंपरागत आदर्श नारी को किंकर्तव्यविमूढ-सा बनाते हैं। नैतिकता के ये पाठ नारी को सडी-गली संस्कृति की लीक में कसकर बांध रखते हैं।

घ) नारी--पुरुष की दासी

पुरुष को कार्यशक्ति का मानदंड माना जाता है। उस के श्रम का आर्थिक मूल्य होता है। शरीर और शक्ति की दृष्टि से नारी पुरुष से निर्बल होती है। उसे जीने के लिए पुरुष के साहचर्य की आवश्यकता अनिवार्य मानी गयी। इन्हीं कारणों से नारी पुरुष की सत्ता के नीचे दब-सी गयी। पुरुष प्रधान परिवार में नारी का स्थान गौण हो गया। गृहिणी के रुप को केंद्र मानकर नारी के विकास की दिशा निश्चित की गयी। एक स्वतंत्र नागरिक के रुप में उसे जो अधिकार प्राप्त होने चाहिए, उससे वह अब भी कोसों दूर है। भारतीय कानून ने नारी को कुछ अधिकार दिये

हैं, पर उससे भी वह अज्ञानी ही रही है।

भारतीय संस्कृति ने पति को परमेश्वर का स्थान दिया। पर कभी-कभी यही परमेश्वर शराब के नशे में अपना देवत्व भूल जाता है। दिन भर नारी घर की मालकिन बनती है और रात को पति की वासनापूर्ति का साधन। सोना और चांदी ही नारी के लिए सब कुछ नहीं है, क्यों कि जीवन का सौदा पैसों से नहीं होता, पति के प्रेम और मातृत्व की पूर्णता से होता है। भारतीय स्त्री इन्हीं सुखों की प्रप्ति के लिए तड़पती रहती है, पर भाग्य उस के साथ खिलवाड़ करता है।

नारी की निराधारता का लाभ उठाकर उससे छल-कपट करने में नराधमों का पुरुषार्थ सिर्फ ईर्ष्यावश पैदा होता है। नारी के प्रति सहानुभूति दिखाने की अपेक्षा अपने स्वार्थ के लिए उसकी बरबादी करने में ही पुरुषार्थ माना जाने लगा। कुल मिलाकर देखा जाय, तो भारतीय नारी पुरुष वर्ग की दासता में पिसी जा रही है।

<u>ड) नारी की प्रतिष्ठा</u>

भारतीय समाज में नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा उसकी व्यक्तिगत महत्ता पर निश्चित नहीं की जाती। उसे जो प्रतिष्ठा दी जाती है, वह उसके परिवार के कारण ही। उसका सामाजिक स्थान निश्चित करने में उसके व्यक्तिगत मूल्य का कोई महत्व नही होता। घर से बेघर होनेवली नारी का सामाजिक मूल्य न के बराबर होता है। अत: नारी का सामाजिक स्थान उसके पति, परिवार पर ही आधारित होता है। यह कुलाभिमान नारी के लिए बाधक सिद्ध होता है। अपने सामाजिक परिवेश में बंद , कुल, जाति की परंपरागत झूठी अहं भावना से ग्रस्त पुरुष वर्ग को अपने कुलाभिमान के सामने नारी प्राण-हत्या का कोई मूल्य नहीं लगता।

च) सैक्स के धरातल पर नारी की दयनीयता

पुरुष की सत्ता में पुरुष की अपेक्षा स्त्री के यौन सम्बन्धों पर कडे निर्बन्ध डाले हैं। सैक्स निर्बन्ध नारी पवित्रता की कसौटी मानी जाती है। इस धरातल पर नारी तुरंत ही बदनाम हो सकती है। सैक्स निर्बंध के सीमित दायरे में जवान ज़िंदगी को ढोना नारी के लिए कठीन काम है, लेकिन नारी की जवानी पुरुषों की आँखों में बैठी रहती है। शहर हो या गांव, दोनों स्थानों पर नारी के प्रति देखने की दृष्टि एक ही है - वासना तृप्ति का साधन। पुरुषों की वासना भरी नजरें, तरसती आँखें, लार टपकते मुंह के बीच नारी को जीना दूभर हो जाता है।

पति-पत्नी में एकनिष्ठता की धारणा होने के बावजूद भी पुरुष अपनी कामवासना की तृप्ति अन्यत्र कहीं भी कर सकता है। पर संस्कृति के संकुचित दायरे में बसी नारी को अतृप्त कामवासना के कारण अंदर ही अंदर मन मसोसकर रहना पडता है। अनैतिक सम्बन्धों के कारण उसे कुलटा, व्यभिचारिणी, चुडैल, कुलच्छनी आदि विशेषणों से अलंकृत किया जाता है। सैक्स संबंधी नारी की अनमनी प्राय: प्रकट नहीं हो सकती, कारण उसे अंत:स्थल में दबाकर रखने में ही समाज की भलाई है। इस क्षेत्र में नारी के प्रति मानवता का व्यवहार नहीं किया जाता, जिससे वह अपनी अनमनी खत्म कर, स्वस्थ हो सके।

तात्पर्य यह है कि भारतीय नारी सांस्कृतिक तथा सामाजिक बंधनों में जकड़ी हुई है। मातृत्व की अनिवार्यता, पुत्रप्राप्ति की अदम्य लालसा, सैक्स के अन्यान्य निर्बन्ध, खानदानी प्रवृत्ति आदि अनेक गलत धारणाओं के कारण नारी का व्यक्तित्व सड़ रहा है। पुरुष जिन अधिकारों को सहजता के साथ अपना सकता है, उसके लिए नारी को संघर्ष करना पडता है। कुंवारी, विधवा, परित्यक्ता या नपुंसक पुरुष की पत्नी को अपने सहजेच्छा के तृप्त करने का कोई समाजमान्य मार्ग नहीं है। पुरुष वर्ग के द्वारा नारी तो हमेशा प्रताड़ित होती आ रही है, पर परिवार में जो

सत्ताधारी नारी वर्ग होता है, उससे भी वह प्रताड़ित है। पग-पग पर नारी को नैतिकता की दुहाई देनी पड़ती है। परंपराओं से चली आ रही नैतिक सीमाओं का वो उल्लन्घन नहीं कर सकती। ऐसे अनेक कारणों से नारी हमेशा एक मानसिक बोझ के नीचे दबी रही है। वह कर्तृत्व क्षमता से परिपूर्ण होते हुए भी अबला, असमर्थ और कमजोर मानकर उसे गौण स्थान दिया जाता है।

२. नारी जीवन से सम्बन्धित विविध समस्याएं

क) बांझपन

संततियुक्त नारी माता, जननी नाम से गौरवान्वित की जाती है। उसे भाग्यवान माना जाता है और संततिहीन नारी को नापाक कहा जाता है। मातृत्वहीन नारी 'बांझ' गाली से अभिहित की जाती है। धार्मिक तथा अन्य शुभ कार्यों में उसको स्थान नहीं दिया जाता। मातृत्व और मातृत्वहीनता के संदर्भ में समाज की धारणाओं के अंतर को हिन्दी कहानी ने बडी सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। मातृत्व की प्राप्ति के लिए भारतीय नारी सदा की लालायित रही है। बांझपन के कलंक को धो डालने के लिए मातृत्व के अलावा अन्य इलाज ही नहीं चल सकता, अत: वैध-अवैध मार्गों का अवलम्ब कर नारी अपना मातृत्व सिद्ध करना चाहती है। क्यों कि बांझपन एक ओर नारी के मन में न्यूनभाव निर्माण करता है, तो दूसरी ओर पति को अवैध सम्बध स्थापित करा देने का मौका प्राप्त करा देता है।

ख) प्रेम और यौन सम्बन्ध

जैविक दृष्टि से स्त्री एक स्वतंत्र इकाई होते हुए भी वह सामाजिक बंधनों से बंधी हुई है। उसके व्यक्तित्व के विकास में यौन भावना महत्वपूर्ण है। पुरुष के प्रति नारी का और नारी के प्रति पुरुष का शारीरिक और मानसिक आकर्षण स्वाभाविक है, पर इस आकर्षण में विकृति पैदा होती है, तब नारी-पुरुष के

सम्बन्ध समस्या बनकर खड़े होते हैं और उसके दुष्परिणाम ज्यादातर स्त्री को ही भुगतने पडते हैं। परंपरागत सांस्कृतिक मर्यादाओं को ढोते हुए भी नारी का हृदय प्यार के लिए भूखा रहता है, पर प्रेम करने का जो हक पुरुष को है, वही स्त्री को प्राप्त नहीं है। अर्थात प्यार करने के लिए भारतीय नारी स्वतंत्र नही है। नारी का प्यार समाज की दृष्टि में केवल व्यभिचार है। हिन्दी कहानीकारों ने इन घटनाओं को चुन-चुन कर अपनी कहानियों में सजगता के साथ चित्रित किया है।

<u>विवाहपूर्व यौन सम्बन्ध</u>

आज के समाज मे विवाहपूर्व यौन सम्बन्ध एक भारी समस्या है। नारी विवाहपूर्व यौन सम्बन्ध स्थापित कर भविष्य के लिए प्रश्नचिन्ह बनकर रह जाती है। यह यौन सम्बन्ध उसे कुलटा, व्यभिचारिणी कहलाने के लिए बाध्य करता है। प्रेमभंग में पुरुष जितना टूट जाता है, उससे बढकर नारी। एक दूसरे के प्रति आत्मसमर्पण का नाम ही प्रेम है। मगर प्रेमी जब उसके शरीर को भोगकर चला जाता है, तब नारी की बची ज़िन्दगी यातनाओं से भर जाती है। स्त्री के यौन सम्बन्धों को हिन्दी के अनेक कहानीकारों ने चित्रित किया है।

<u>विवाहोत्तर यौन सम्बन्ध</u>

भारतीय समाज में पति-पत्नी की परस्पर एकनिष्ठता को दाम्पत्य जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। 'दांपत्य' दो आयामों का ही संगम है और हजारों साल से 'दो' और 'केवल दो' को ही दांपत्य जीवन का परम आदर्श माना जाता है। इसी कारण भारतीय समाज नारी के विवाहोत्तर यौन सम्बन्ध की कल्पना ही नहीं कर सकता। एक की पत्नी दूसरे की प्रेमिका नहीं बन सकती। पति के होने, न होने पर भी पत्नी की पति के प्रति एकनिष्ठता उसपर आरोपित भावना है। नारी की आस्था एक ही पुरुष में होना आदर्श माना गया है। विवाहोत्तर अवैध यौन सम्बन्ध पति-पत्नी के सम्बन्धों

को चुनौती देता है। अपने व्यभिचारों से पुरुष का जीवन मानसिक यातनाओं से भर देनेवाली नारियां हिन्दी कहानी में भरी-पूरी है। अवैध यौन सम्बन्ध प्रस्थापित होने के लिए कभी नारी की अतृप्त काम वासना, कभी पुरुष तथा कभी समाज भी उत्तरदायी होता है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में विवाहोत्तर अवैध यौन सम्बन्धों के परिणाम बुरे ही निकले हैं। एक नारी का अवैध यौन सम्बन्ध दूसरी नारी की गृहस्थी में आपत्ति खडा करता है। भारतीय नारी के लिए शारीरिक भूख मिटाने का केवल एकमात्र प्रशस्त मार्ग है - विवाह। अपने पति के अलावा किसी भी अन्य पुरुष से वह यौन तृप्ति करा लेने में स्वतंत्र नही है। पर पति के नपुंसकत्व से विवश होकर और बांझपन के शाप से मुक्त होने के लिए कभी - कभी वह परपुरुष-रत होती है। एक स्त्री किसी दूसरे विवाहित पुरुष से अवैध यौन सम्बन्ध प्रस्थापित करती है, तब और भी अनेक जटिलताएँ निर्माण होती हैं।

ग) विवाह

भारतीय संस्कृति में विवाह एक पवित्र संस्कार माना जाता है, पर उसका दूसरा पक्ष अंधकारपूर्ण होता है। इसी अंधकार पक्ष का चित्रण हिन्दी कहानी में मिलता है।

दहेज़

दहेज़ प्रथा के कारण विवाहोत्तर जीवन कलंकित हो गया है। लेन-देन के इन रस्म - रिवाज़ों में वधूपक्ष की हीनता स्पष्ट है। भारतीय जन - जीवन में दहेज़ के कारण विवाह एक समस्या बन गयी है। बेटी होना पिता के लिए संकट माना जाने लगा। दहेज़ के रुप में बढती अर्थ - लोलुपता से उत्पन्न दानवीय स्थिति के गहरे रुप हिन्दी कहानी में चित्रित हैं।

अनमेल विवाह

अनमेल विवाह, जीवन की त्रासदी का बीजवपन कर विकृती को स्पष्ट करता है। कुछ विवशताओं से मजबूर होकर किये गये इन विवाह सम्बन्धों के कारण पति-पत्नी के बीच लगाव के स्थान पर अलगाव की स्थिति ही अधिकतर दृष्टिगोचर होती है। अनमेल विवाह में पुरुष वर्ग ने अपनी सुविधा कर ली है। अन्याय होता है तो स्त्री जाति पर। नारी की इस दुर्गति के लिए समाज और परंपरा उत्तरदायी है।

नारी पूर्ण पुरुष चाहती है। पर अनमेल विवाह के कारण बहुत बार नारी का विवाह वृद्ध के साथ हो जाता है। पुरुष की यह अपूर्णता नारी को वेश्या बनाती है। अनमेल विवाह नारी का जीवन विकृत बनाता है।

घ) वैधव्य

जिस स्त्री का पति ज़िन्दा है वह पुण्यवान, गुणवान और शुभशकुन-युक्त मानी जाती है, इसी कारण उसे सौभाग्यवती कहा जाने लगा। उसे धार्मिक कार्यों में महत्ता प्राप्त हो गयी और जिसका पति चल बसा है, वह दुर्भाग्यशाली मानी जाने लगी। विधवा नारियों की व्यथा पति खोने की अपेक्षा समाज से मिलनेवाली प्रताड़ना में अधिक है। इस सामाजिक अपमान और उपेक्षा के भय के कारण नारी की दृष्टि में पति का अस्तित्व अनन्यसाधारण हो गया।

विधवा - यौन निर्बन्ध और पुरुष वासना के बीच

भारतीय समाज में नारी के शील, चारित्र्य को अति महत्व दिया जाता है। पति के होने, न होने पर भी पातिव्रत्य का पालन करना उसका धर्म माना जाने लगा। नारी जब इस मान्यता का भंग करती है, तब समाज, रिश्तेदारों की ममता, सहानुभूति को खो बैठती है। सैक्स निर्बन्ध नारी पवित्रता की कसोटी में आंकने के कारण सैक्स के धरातल पर नारी तुरंत ही बदनाम हो सकती है, क्यों कि भारतीय नारी का नारीत्व उसी में समाहित माना जाता है।

विवाह के बाद तुरंत ही विधवा बनी नारी के लिए भारतीय संस्कृति बड़ी समस्या है। न वह पुनर्विवाह कर पाती है, न जवानी का इलाज करा पाती है। इन विकृत सामाजिक मूल्यों ने विधवा जीवन भी विकृत कर दिया है। इन मूल्यों के भंग होने से उसका पूरा जीवन ही तितर - बितर हो जाता है। पति के मृत्योपरांत यौन सम्बन्धों का अंत हो कर पत्नी के लिए बाकी रहती है एक वीरान और सुनसान जिंदगी। पति द्वारा प्राप्त यौन सम्बन्धों और प्रेम को फिर न पाने का दु:ख उसके लिए अकथनीय होता है। पहले तो नारी को भोग्य वस्तु के रुप में ही देखा जाता है और फिर सुरक्षाहीन विधवा को तो वासनातृप्ति के सार्वजनिक साधन के रुप में देखा जाता है। पति - पत्नी का अपनत्व से भरा हुआ मीठा प्यार उसके लिए हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है और समाज कंटकों को वह वासना संतुष्टि का साधन प्रतीत होती है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में विधवा जीवन के सभी अंगों को करुणा के साथ व्यंजित करने का प्रयास हुआ है।

वैधव्य की उपज : वेश्या और देवदासी

विधवा जीवन की दयनीयता सनातन भारतीय समाज रचना का एक परिणाम है, जब कि विधवा अपने आप में एक विराट समस्या है। वेश्या और देवदासी उसी समस्या से निर्मित दूसरी समस्याएं हैं। वेश्या जीवन नारी जीवन का कुरुप अंग है। सामाजिक प्रवंचनाओं से तंग आकर नारी को इस निकृष्ट धंधे को अपनाना पडता है।

च) नारी शोषण - पुरुष जाति की घृणित मानवता

भारतीय नारी का अर्थ और सैक्स के धरातल पर दोहरा शोषण होता है। स्त्री और पुरुष दोनों के लिए सैक्स की अदम्य आवश्यकता है, पर उसमें विवाह को आधार बनाया गया है। इसी कारण अनैतिक लैंगिक सम्बन्धों पर निर्बन्ध आवश्यक है। भारतीय परंपरा मे अवैध यौन सम्बन्ध पाप माना जाता है, मगर पुरुष की दृष्टि में

नारी काम वासना तृप्ति के साधन के अतिरिक्त और कोई विशेष महत्व नहीं रखती। अत: नारी के भोग के लिए पुरुष वर्ग प्राय: लालायित रहता है। नारी को उसकी अनियंत्रित काम वासना का शिकार बनना पडता है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में नारी के सैक्स के धरातल पर शोषण को अधिक विश्लेषित किया है।

नारी के प्रति पुरुष का शारीरिक ओर मानसिक आकर्षण आगे चलकर शरीर तक ही सीमित रहा। पुरुष के उपभोग की यह वस्तु क्रमश: शोषण की वस्तु बन गयी। अधिकार संपन्न पुरुष वर्ग के शोषण का शिकार नारी को बनना पडा। आर्थिक विवशता नारी को अपनी अस्मत बेचने के लिए विवश करती है। सामन्तयुग में नारी को केवल वासनातृप्ति का साधन माना जाता था। आधुनिक युग में इसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। जीवन को कलंकित करनेवाली यह प्रवृत्ति नारी के लिए अत्यंत बाधक है। स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने नारी के प्रति सहानुभुति रखते हुए बड़े ही आत्मीयता के साथ इस पीडा को अभिव्यंजित किया है।

उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों में चित्रित नारी जीवन

उपेन्द्रनाथ अश्क प्रेमचंद संस्थान के आधुनिक कहानीकार हैं। उनका परिचय साहित्यकार के रुप में सर्वप्रथम कहानी लेखक के माध्यम से हुआ। इनकी प्रथम हिन्दी कहानी प्रेमचंद द्वारा संपादित 'हंस' मासिक पत्रिका में सन १९३३ में प्रकाशित हुयी। तब से लेकर आज तक उनकी कहानियां अबाध गति से प्राप्त होती हैं। अश्कजी यद्यपि प्रगतिशील दृष्टि संपन्न कहानीकार हैं, फिर भी विषयवस्तु, भाषाशैली एवं दृष्टिकोण के कारण वे प्रेमचंद परंपरा को ही आगे बढाते हैं। अश्क की कहानियों के विषय समाज के मध्यवर्ग और निम्न-मध्यवर्ग से चुने गये हैं। इसीलिए उनकी कहानियों में सामाजिक कुप्रथाएँ, कुरीतियाँ इनका चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों में समाज की बुराइयों की कटुतम आलोचना की गई है। नित्य प्रति की समस्याएं और मध्य वर्ग का जीवन उनकी कहानियों के प्रतिपाद्य हैं।

१९ वी शताब्दी में सामान्यत: और २० वी शताब्दी में विशेषत: धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिवर्तन के फलस्वरुप भारतीय नारी में नवजागरण और स्वाभिमान की भावनाएं पुन: जाग रही थीं। इसके परिणाम स्वरुप अश्क की कहानियों में भी नारी के विविध रुप और उसकी समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों में नारी की ओर देखने के विभिन्न दृष्टिकोण ओर अनुभूतियों की अभिव्यंजना में पर्याप्त वैविध्य मिलता है। इसका कारण है अश्क ने जीवन को निकट से देखा है, उसका अनुभव किया है। अपने पात्रों की भावनाओं के अंतर्द्वंद्व के माध्यम से इन्हों ने परिवर्तित समाज की बदलती निगाहों का चित्रण किया है और परंपरागत अमान्य प्रथाओं के प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया है।

कहानी का मूल आधार मानव चरित्र है और इसकी मानव प्रवृत्तियों का विशुद्ध उदघाटन ही कहानीकार की पूर्णता का प्रतीक है। अश्क की दृष्टि चिन्तक होने के साथ ही सामाजिक कुप्रवृत्तियों की आलोचना, समाज सुधार और मानसिक संघर्षों के अन्तर्द्वंद्वों, बहुरुपताओं, सैक्स की कुण्ठाओं का चित्रण अश्क की कहानियों में हुआ है।

अश्क ने प्रेमचंद की परंपरा को ही अधिकतर समृद्ध किया है, उसे नया आयाम दिया है। इस कहानी धारा को नया मोड़ दिया है। इसलिए अश्क जब नारी समस्याओं को उठाते हैं, तो उसका समाधान प्रेमचंद की तरह किसी आश्रम, सदन या निकेतन की स्थापना में न खोजकर समस्त सामाजिक विधान में ही खोजते हैं। उनकी कहानियों में प्राचीन कहानीकारों की भांति नारी समस्या सामाजिक समस्या से अलग की चीज नहीं हैं। उनके कुछ नारी पात्र प्राचीन समस्याओं पर नये ढंग से विचार करते हैं और अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करते हैं।

नारी और प्रेम

प्रेम एक व्यापक और मधुर भावना है, जो प्रत्येक स्त्री - पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करती है। मनुष्य जाति के जन्म से लेकर आज तक इस विषय को लेकर सभी जाति - धर्मों में, सभी कालों में और विश्व की प्रत्येक भाषा में बहुत कुछ लिखा गया है। स्त्री - पुरुष का आकर्षण एक प्राकृतिक सत्य है। इसी आकर्षण पर सृष्टि का विकास अवलंबित है। इसलिए आदिकाल से ही नर - नारी के सम्बन्धों में प्रेमतत्वों को अनिवार्य माना गया है। प्रेम के बिना इन्सान का जीवन मरुस्थल की तरह है। प्रेम ही इन्सान के जीवन को जीवित रखता है।

प्रेम पवित्र होता है। प्रेम में मन की पवित्रता के साथ साथ शरीर की पवित्रता भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। पुरुष एक स्त्री के रहते दूसरी के साथ प्यार कर सकता है, लेकिन नारी जीवन में एक बार ही प्रेम करती है। अगर

परिस्थितिवश अपना शरीर भ्रष्ट हो गया तो उसे अपने प्रेमी को समर्पित नहीं करती। वह प्रेम में मन और तन की पवित्रता को महत्व देती है। 'वह मेरी मंगेतर थी' कहानी की मुर्तू उसी प्रकार की युवती है। गांव के किसी युवक से उसे प्यार हो जाता है। दोनों का प्रेम विवाह में परिणत होनेवाला ही था कि वह दारोगा के अत्याचार का शिकार बन जाती है। उसकी इज्जत लूटी जाती है। मुर्तू अपने सतीत्व को लुटाकर गांव में जाने का साहस नहीं करती। परिणामत: वह वेश्या बनती है। तीन साल बाद जब उसकी मुलाकात अपने प्रेमी से होती है, तब उसे रेशमी रुमाल वापस देते हुए कहती है, "आज तीन साल से मैं ने इसे सम्हालकर रखा है, परंतु यह पवित्र रुमाल अब मुझ - सी अपवित्र नारी के पास नहीं रहना चाहिए। इसे अपनी नव - वधू को भेंट कर देना।"१ सही अर्थों में मुर्तू ही पवित्र है। जो अपने प्रेमी के प्रेम को कलंकित नहीं होने देती।

प्रेम यह मनुष्य के मन की सहज अनुभूति है। प्रथम प्रेम का ज्वार कुछ ऐसा होता है कि उसके तूफान को भुलाया नहीं जा सकता। 'ठहराव' इस कहानी में प्रेम के प्रथम ज्वार का और विवाहोत्तर पति - पत्नी के पवित्र प्रेम का वर्णन किया है।

कहानी नायिका शकुन अपने ही घर में रहनेवाले हेमी की ओर आकर्षित होती है। हेमी उनका आश्रित था। वह मेधावी और परिश्रमी लडका था। पहले पहले तो शकुन उससे नफरत करती थी, लेकिन "एम. ए. में दाखिल होते ही मैं अचानक उससे प्यार करने लगी (यदि उस पागलपन को प्यार कहा जा सकता है तो!) और वह आवेग आंधी-सा उठकर मेरे मन - प्राण पर छा गया।"२ यौवन में हमे लगता है कि कोई हमारी ओर देख रहा है और वास्तव में वह सच होता है, तो उसका आनंद कुछ और ही होता है। इस घटना का जिक्र करते हुए शकुन लिखती है, "पढ़कर लडकों के चले जाने के बाद भी हेमी वहीं

बैठा रहा। मुझे लगा जैसे वह निरंतर मेरी ओर देख रहा हो। मेरी गर्दन के पीछे दो चोटियों के बीच बालों की एक छोटी-सी लट है, जो किसी चोटी में नहीं आती और बाल घुंघराले होने से उसका कुण्डल बन जाता है। मुझे लगा हेमी की दृष्टि उसी में जमी है। विचार मात्र से मुझे रोमांच हो आया और मै आंचल ठीक करने के लिए मुड़ी। उसकी दृष्टि कापी पर नहीं, मेरी ओर ही लगी थी।"३

हेमी की ओर शकुन किस तरह आकर्षित हुयी, इसकी चर्चा करते हुए वह कहती है, "हेमी के आकर्षण ने मुझे अनायास चतुर बना दिया। अम्मा और बाबूजी के सामने मै सदा उसकी बुराई करती अथवा उसके प्रति घोर वितृष्णा प्रकट करती, लेकिन अकेले में उसे एक नजर देखने, उससे दो बातें करने का अवसर खोज लेती।"४

हेमी के साथ बरसात के दिनों में शक्को घूमने चली जाती है। उसके ना करने पर भी वह किश्ती की सैर करती है। तब उसे लगता है कि हेमी से उसे अगाध प्रेम है और उसके बिना वह ज़िन्दा नही रह सकती। शक्को पढ़ाई करना चाहती है, पर लाख कोशिश करने के बावजूद भी वह एक अक्षर भी पढ नहीं सकती। वह अपने आप को रोक नहीं पाती और रात के तीन बजे हेमी के कमरे मे दाखिल हो जाती है।

"लेकिन मुझे लग रहा था कि हेमी से उसी वक्त न मिलूंगी तो सो न पाऊंगी उसी रात नही, उसके बाद की रात भी नहीं, कभी नहीं - मेरी नींद सदा - सदा के लिए उड जायेगी।"५

"हेमी के कमरे की बत्ती बुझ चुकी थी। शायद वह थक हार कर सो गया था। कमरे का दरवाजा खुला था, मैं बिना दस्तक दिये अन्दर दाखिल हुयी। चाहती थी, उसके बालोंपर प्यार से हाथ फेरकर उसे जगा दूं, पर शायद वह भी मेरी तरह गंगा के लहरों पर विचर रहा था, सोया न था। इससे पहले कि मैं उसकी चारपाई के पास पहुंचती, वह चौंककर उठा, 'कौन ?'

'मैं, शक्को! ' मेरे होठों से बमुश्किल आवाज निकली -- और दूसरे क्षण में उसके

सीने से चिमट गयी। 'शक्को! तुम नहीं चाहती कि मैं यहाँ रहूं?' उसने जैसे मेरी गर्दन की उसी लट से कहा, क्यों कि वहां मैंने उसकी सांस की गर्मी महसूस की।

'मै चाहती हूं कि तुम हमेशा - हमेशा यहां रहो।' मैंने उसके सीने से लगे - लगे कहा, 'मै तुमसे अब नहीं मिलूंगी, पर मै कहने आयी थी कि मैं तुम्हारी हूं, तुम्हारी ही रहूंगी।'

गर्दन की उस लट पर गर्मी कुछ और बढ गयी। "शक्को ! मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास है, लेकिन अब तुम अपने लिये, मेरे लिए, भगवान के लिए यहां से चली जाओ।"

'बस चली जाती हूं।' मैंने बरबस अपने आपको उससे अलग किया। उसके दोनों गाल अपने हाथों में लिए, निमिषभर उसकी आंखों में देखती रही, फिर उसके दोनों गाल हल्के से दबाकर पलट आयी।

और जैसे मेरे मन का सारा बोझ उतर गया हो। बिस्तर पर लेटते ही मै गहरी नींद सो गयी।'६

लेकिन शक्को का यह प्रेम ज्वार जितनी तेज़ी से उपर उठा था, उतनी ही तेज़ी से कुचला गया। हेमी को घर से बाहर कर दिया गया और शक्को की शादी उसकी मर्जी के खिलाफ नागपाल से हो गयी। नागपाल ने शक्को को ऐसा प्यार दिया कि वह अपने पहले प्यार को भूल गयी। उसके मन में संदेह निर्माण हुआ कि वह प्यार सच था या यह। अपनी सहेली को लिखे हुए पत्र में वह स्पष्ट शब्दों में लिखती है - "मन्नो, अब तुम्हें विश्वास आ जायेगा कि मै अपने उस आवेग को नहीं भूली। यो मुझे उसकी याद नही आती, पर अब जब लिखने बैठी हूं, तो उस आवेग का सूक्ष्म से सूक्ष्म ब्यौरा मेरी आँखों के सामने आ गया है। तुम कहोगी, यदि वह प्यार नहीं था, तो फिर प्यार होता क्या है ? पर मन्नो, यदि मैं नें दूसरे प्यार की अनुभूति

न पायी होती तो शायद मैं भी जिन्दगी भर इसी को प्यार समझती, लेकिन मैनें एक और गहरे, नस-नस से उछल पड़नेवाले, नहीं, नस-नस में पैठकर रक्त का अंग बन जानेवाले प्यार की भी अनुभूति पायी है। मै अपनी इस अनुभूति को झूठला कैसे दूं ?।"७

शकुन अपने विवाहपूर्व प्रेम की बात नागपाल से कहती है। वह अपने मन का बोझ उतारती है। "पर सुनकर उन्होंने जो कहा, उससे मेरा मन आर्द्र हो गया, 'शकुन, नहीं जानता, मै तुम्हारा प्यार पा सकता हूं या नहीं, पर मै कोशिश जरुर करुंगा और तुम्हें मुझसे कोई शिकायत नहीं होगी।' और मन्नो, मै अभिभूत हो गयी। मेरे मन का सारा ताप मिट गया और मेरे रोम रोम से स्नेह झर उठा।"८

कहानी के अंत में अपने दोनों प्यार की तुलना करते हुए शक्को लिखती है - "कभी कभी सोचती हूँ, क्या वह आवेग सच्चा प्यार था अथवा यह ममत्व ? हो सकता है, दोनों सच्चे हो, पर मुझे कभी कभी लगता है कि वह तो छोटासा बरहा था, जिसके किनारे मैं प्यास की मारी जा पहुंची थी, पर जिससे प्यास बुझाकर भी मैं प्यासी ही रह जाती और यह तो निर्मल जल का एक विशाल सरोवर है, जिसने मेरे सारे ताप को हर कर मेरी सदा सदा की प्यास बुझा दी है।"९

'निशानियां' कहानी की सरला एक विवाहित पुरुष की ओर आकर्षित होती है और मन ही मन उससे प्रेम करने लगती है। वह जानती है कि इस प्रेम का कोई नतीजा नहीं है, इसी कारण अपने प्रेम को प्रकट नही होने देती। उसकी शादी हो जाती है। विदाई के पहले वह कहानी नायक के पास आ जाती है। उसका वर्णन करते हुए लेखक कहता है -

"सरला की बिदाई में कोई एक ड़ेढ घण्टा रह गया होगा कि किसी ने धीरे से मेरे कमरे की चिक उठायी। देखा, सरला सामने खडी है - सुंदरता, सुषमा, आकर्षण, लालित्य, हर्ष और उल्लास की जीवित मूर्ति।

'मै आपसे कोई निशानी मांगने आयी हूं।' उसकी चंचल आँखों नें कमरे की

तलाशी-सी ले ली ।

मैं ने दीर्घ निश्वास छोडा। क्या निशानी देता ! जो कुछ मेरा था, वह तो पहले ही दे चुका था। बोला-'क्या दूं तुम्हे' ? मेरे पास तुम्हारे योग्य कुछ हो भी !'

'कुछ क्यों नहीं, सब कुछ है।' उसकी चंचल दृष्टि फिर इधर उधर घूमी और फिर मेज पर पडी हुई संगमरमर की डिबिया पर जम गयी।

'बस, मै यही लूंगी।'

मैं ने उसे रोकने के लिए हाथ बढाया - न न करता रहा। 'मैं इसे आपकी निशानी के तौर पर अपने पास रखूंगी।' और यह कहते हुए डिबिया को सीने से लगाये वह भाग गयी। मै कुर्सी में धंस गया।"१०

'कुन्ती' एक असफल प्रेम कहानी है। कहानी की नायिका कुन्ती अनपढ़ युवक मोहन से प्रेम करती है। वह उसे इतना योग्य बनाती है कि वह परीक्षा में अच्छे गुणों से पास हो । कुन्ती की भावनाओं का लेखक ने विस्तार के साथ वर्णन किया है। 'आज तक उसने अपने आप पर संयम रखा था। अपनी सारी शक्तियों से अपने दिल पर काबू रख उसने भरसक प्रयत्न किया था कि मोहन उसके दिल की बात न जान जाय, कहीं वह उसकी मुहब्बत के फेर में अध्ययन को भूल न जाय, किन्तु आज वह चाहती थी मोहन के सामने अपना दिल खोलकर रख दे, उसे प्यार करे। परीक्षा फल जानने के बाद वह उसे अपने सामने बिठा लेगी और अपने श्रम की दक्षिणा मांगेगी। मोहन उससे नफरत नहीं करता, कुंती का विश्वास था वह उससे मोहब्बत करता है। पर स्वामी और सेवक की परिस्थिति कुंती जानती थी, उसमे साहस नहीं, या शायद उसकी मुहब्बत कृतज्ञता के बोझ के नीचे दब गयी है। कुंती वह बोझ उठा लेगी। उसके साहस को छेड़कर लाहौर में नवजीवन की नींव रखेगी। मोहन को कोई न जानेगा। उसकी सखियां ऐसा सुंदर, ऐसा

बुद्धिमान वर ढूंढने पर उसे बधाई देगी और फिर कुंती एक कॉलेज खोलेगी और मोहन उसका मॅनेजर बन जायेगा। तभी उसे आशंका होती है कि उसकी माँ एक नौकर के साथ अपनी एकमात्र लडकी की शादी करना कभी पसंद न करेगी और शायद समाज --- पर वह इन आशंकाओं को सिर के एक झटके से हटा देती। यदि लाहौर उनको स्वीकार न करेगा, तो वह उसे लेकर कहीं और चली जायेगी, दिल्ली या कलकत्ता --।'११

इस प्रकार हम देखते हैं कि कुंती अपने प्रेमी को पाने के लिए विद्रोह करने के लिए भी तैय्यार है। पर दुर्भाग्य से वह यह नही जानती कि उसका प्रेमी मोहन शादीशुदा है। कहानी के अंत में मोहन अपने पत्नी को लेकर कुन्ती के सामने उपस्थित हो जाता है और कुन्ती उसकी पत्नी को गले लगाती है।

अपने प्रेमी के प्यार मे डूब कर सब कुछ निछावर करनेवाली नारी का हृदय यह देख कर तडप उठता है कि उसका प्रेमी किसी दूसरी स्त्री का हो गया है। नारी अपने प्रेमी की यह बेईमानी सह नही पाती। उसे किसी दूसरी स्त्री के प्यार में फंसा देख उसके हृदय में प्रतिशोध कि चिनगारी भभक उठती है और फिर वह किसी भी कीमत पर अपने प्रेमी को अपनाने को उद्यत हो जाती है। ऐसी ही नारी को अश्कजी ने 'जुदाई की शाम का गीत' में चित्रित किया है। माधो एक गांव का सीधा-सादा, गरीब युवक है, जो कि गीत गाता, बाँसुरी बजाता और पर्वतों की उंची-नीची घाटियों मे घूमा करता था। उसकी प्रेमिका थी मिन्नो, "वह एक सीधी सरल पहाडी युवती थी। उसकी आँखों मे अदभुत आकर्षण था। वह अपनी गायें चराया करती। माधो भी प्राय: उसके साथ पहाड की ऊँची-नीची पगडण्डियों पर ठोकरें खाता फिरता। फिर संध्या को दोनों वापस आते।"१२

दोनो एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे, किन्तु अचानक एक दिन एक शहरी युवती राजरानी अपने पिता के साथ उस देहात में आयी। उसने माधो को नौकर रख लिया, किन्तु अब माधो का दिल उसके काबू से निकल चुका था। उस पर अब राजरानी का अधिकार

था। मिन्नो का स्थान अब उसने ले लिया था। मिन्नो बहुत रोई, किन्तु माधो विचलित नहीं हुआ। उसने राजरानी से विवाह की बात पक्की कर ली थी। अंत मे हार कर मिन्नो ने माधो से प्रार्थना की, कि वह केवल एक दिन उसके साथ बिताये। माधो ने प्रार्थना स्वीकार की। दूसरे दिन दोनों साथ घूमें, गीत गाये, "संध्या को वह उसे इस चट्टान पर ले आयी। यहाँ आकर उसने माधो से इन पहाडियों का प्रसिध्द विरह गीत सुनाने की प्रार्थना की। माधो ने बाँसुरी को काँपते हुए अधरों से लगाया। विरह का लोक-गीत वायुमण्डल में गूँज उठा और ऐसा जान, पडा जैसे एक क्षण के लिए मिन्नो के प्रति माधो का अनुराग जाग पडा है।"१३

गीत समाप्त होते ही मिन्नो माधो को उस चट्टान से सम्बन्धित एक प्रेम कहानी सुनाने लगी, जो बिल्कुल उनकी प्रेम कहानी जैसी थी। "मिन्नो ने अपनी कहानी समाप्त करते ही इस गीत के अन्तिम पद को अपने सुरीले स्वर मे दोहराया और इससे पहले कि माधो सावधान होता, उसने उसे अपनी बाहों में भींच लिया और खड्ड मे कूद गयी। नीचे खड्ड मे दोनों लुदके जा रहे थे, अलग अलग नहीं, एक दूसरे के आलिंगन में।

जीवन में वे अलग होने का प्रयत्न कर रहे थे, किन्तु मृत्यु ने उन्हें चिर - आलिंगन में बाँध दिया था।"१४

<u>नारी और विवाह</u>

प्रकृति ने नारी को पुरुष के पूरक रुप में बनाया है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अपूर्ण रहता है। विवाह इसी प्राकृतिक विधान का सामाजिक संस्कार है। पुरुष और नारी के पारस्परिक सम्बन्धों में पति - पत्नी संबंध सर्वाधिक स्पृहणीय एवं श्रेष्ठ माना गया है। प्राचीन काल से ही स्त्री और पुरुष ने पारस्पारिक आकर्षण का अनुभव किया है और प्राय: विश्व के सभी सभ्य समाजो में

इस सम्बन्ध को विवाह के रुप में मान्यता दी गयी है। पत्नी बनकर नारी पुरुष की सहधर्मिणी और अर्धांगिनी बनती है और अपने जीवन को सार्थक बनाती है। इसी कारण हमारे प्राचीन धर्मग्रंथों में पत्नी को श्रेष्ठ सहचरी के रुप में स्थान दिया गया है। परंतु समाज परिवर्तनशील होता है और भारतीय समाज में भी समय-समय पर परिवर्तन होते रहे है। बदलती परिस्थिति, विविध धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के परिवर्तनों के कारण भारतीय नारी की स्थिति में भी उतार - चढाव आते रहे हैं।

'अंकुर' कहानी की नायिका तेरह वर्षीय सेंकरी विपन्न, ब्राम्हण परिवार की अत्यंत अबोध बाला है, जिसका विवाह अपने से पैंतीस-चालीस साल बड़े एक बूढे पंडित से संपन्न हो जाता है। बालिका अपने विवाह में चढने वाले ढेरों गहनों की चमक - दमक में चकाचौंध हो जाती है और फूला नहीं समाती। फिर भी उसे अपने बूढे पति से भय जैसा लगता है, परंतु चालाक पति उस भय को नये-नये कीमती गहनों एवं कपडों के माध्यम से दूर करने में सफल हो जाता है। साथ ही बालिका भी प्रसन्न हो जाती है। सैक्स भावना एवं तद्जनित बेचैनी से वह सर्वथा अनभिज्ञ रहती है। कहानी के अंत में जब उसका पति मर जाता है और उसकी माँ उसके संपूर्ण गहनों को अपने साथ ले जाने की इच्छा व्यक्त करती है, तो वह आधी रात को उठकर अपने कमरे में जाती है और अपने प्रिय आभूषणों को पहन कर देखती है। जब वह कंठी का हूक लगाने को होती है, तभी उसे अचानक पांच वर्ष पहले के ब्राम्हण युवक की याद आती है, जिसने उसकी कंठी का हूक लगाया था। जिसकी उँगलियों के स्पर्श मात्र से उसके संपूर्ण शरीर में मधुर, मादक सिहरन उत्पन्न हो गयी थी। दूसरे दिन जब मां ने वापस जाते समय सेंकरी से गहनें मांगे तो उसने देने से इन्कार किया। मां ने उसे बहुतेरा उंचा - नीचा दिखाया, पर वह अपनी ज़िद पर अटल रही। अंतिम अस्त्र के रुप में मां ने चोरों का डर बताया, तो उसके प्रतिकार स्वरुप सेंकरी

ने कहा कि वह परमेश्वरी ब्राम्हणी को अपने घर रखने की सोच रही है। उसका लड़का युवक है। जब वह रहेगा तो किसी प्रकार का डर भी नहीं रहेगा।

इस कहानी से अश्कजी ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि अनमेल विवाह के कारण सेंकरी विधवा हो जाती है। उसके पति ने उसे जहां तक हो सके यौन संबंधों से दूर ही रखा था। लेकिन उसकी मृत्यु के बाद सेंकरी को उस युवक की याद आती है, जिसके स्पर्श मात्र से उसके शरीर में सिहरन पैदा हो गयी थी। इसी कारण अंत में वह परमेश्वरी ब्राम्हण की शरण लेना चाहती है, जिसका पुत्र युवा है। अर्थात यौन आकर्षण सहज स्वाभाविक है। अनमेल विवाह के कारण उसमें अनैतिकता आ सकती है।

अनमेल विवाह के कारण निर्माण हुई अनैतिकता का कारण केवल पति और पत्नी के बीच होनेवाला आयु का अंतर ही नहीं बल्कि दोनों के स्वभावों में, विचारों में होनेवाला अंतर भी हो सकता है। इससे पति और पत्नी में दूरी निर्माण हो जाती है और अवैध यौन सम्बन्धों का आकर्षण निर्माण हो जाता है। ऐसे अवैध यौन सम्बन्ध प्रस्थापित होने के लिए कभी नारी की अतृप्त काम वासना, तो कभी पुरुष उत्तरदायी होता है। ऐसी ही एक नारी का चित्रण अश्कजी ने अपनी 'चट्टान' कहानी में किया है। कहानी की नायिका-भाभी, जिसका पति नौकरी छोडकर मानवता की सेवा कर रहा है। समाजसेवा करते करते अध्यात्मिक उँचे आदर्शों को अपनाते हुए उसने जीवन के सुखोपभोगों को त्याग दिया है। यहां तक कि दाम्पत्य - जीवन से भी उसने मुँह मोड लिया है। इस के परिणाम स्वरुप भाभी का जीवन दुखी बन गया। इसका वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है, "शंकर ने उसे कम ही हंसते देखा था। जब भी कभी वह हंसी थी, शंकर को उसकी हंसी मे एक गहरी व्यथा और व्यंग्य की झलक दिखाई दी थी और फिर शंकर ने सुना था कि उसका दिल बडा कमजोर है। जरा -जरा सी बात पर बेतरह धडकने लग जाता है। फिट भी आते हैं और सिर - दर्द की आम शिकायत उसे रहती है। उसकी आँखों

में कुछ ऐसी प्यास, कुछ ऐसी अतृप्ति रहती थी कि शंकर के हृदय में दया की हलकी-सी भावना जाग उठती थी।"१५ और भाभी अपने घर मेहमान आये शंकर की ओर आकर्षित होती गयी। धीरे धीरे भाभी अपनी सैक्स भावना के दमन को सह न सकी और अपनी स्वाभाविक, नारी सुलभ लज्जा छोड़ एक दिन शंकर के प्रति आत्मसमर्पण के लिए उद्यत हो गयी। "एक दिन भाई साहब पास के गांव में रोगी को देखने के लिए गये हुए थे। शंकर अपने कमरे की दीवार से पीठ लगाये, खूंटी से टंगी हुई लालटेन के नीचे बैठा अध्ययन में निमग्न था कि भाभी आ गयी और फिर उसके पास ही बैठ गयी। शंकर चुपचाप पुस्तक पढ़ता रहा, वह बैठी रही। फिर एक अंगडाई सी लेकर वह वहीं चटाई पर उसके पास लेट गयी।

शंकर ने कनखियों से एक बार उसकी ओर देखा। साडी का आंचल सिर से खिसक गया था। ब्लाउज़ का बटन खुल गया था। -- शंकर ने आँखें हटा ली। फिर पढ़ने का प्रयास किया।

"उसका अपना सीना धक धक करने लगा। पुस्तक उसके हाथ से गिर गया और उसकी दृष्टि सुडौल कूल्हों, पतली कमर और वक्ष के पहाड़ों के मध्य उस घाटी पर छिछलती हुई भाभी के मुख पर जाकर रुक गयी - भाभी निस्पन्द, निष्प्राण, अचेत सी पड़ी थी। उसके होंठ सूखे हुए थे और उनकी पपडियों में आड़ी लकीरें पडी थी। -- वही उन लकीरों पर उसकी निगाहें जम गयीं और उसने चाहा कि उन प्यासे होठों को चूम ले। इस जोर से चूम ले कि उन लकीरों में खून सिमट आये और वह झुका ---

तभी भाभी ने धीरे धीरे आँखे खोल दी। वही प्यासी प्यासी, उदास - उदास, कामना - भरी आँखे। उन्हीं में देखता हुआ वह और झुका --"१६

सचमुच नारी एक पहेली ही है। कभी वह अपनी अतृप्त सैक्स भावना को तृप्त करने के लिए पर - पुरुष से अवैध यौन सम्बन्ध प्रस्थापित करने में भी नहीं हिचकिचाती, तो कभी पर-पुरुष का केवल मन ही मन में आकर्षण निर्माण हो गया, तो

भी अपने आप को अपराधी समझती है। ऐसी ही एक नारी का चित्रण अश्कजी ने अपनी 'पहेली' कहानी मे किया है। रामदयाल एक बहुत ही कुशल अभिनेता है। भेस और आवाज बदलने में उसे कमाल हासिल है। बम्बई में सिनेमा कम्पनी में काम करता है। धनी था, अभी कुछ दिन पहले उसका विवाह हुआ है। "उर्मिला उसकी पत्नी, अनुपम सुन्दरी थी, कल्पना से बनी हुई सुन्दर प्रतिमा-सी। मीठे मादक स्वर के रुप में विधि ने उसे जादू दे डाला था। संगीत कला में उसने विशेष क्षमता प्राप्त कर ली थी और यह गुण सोने में सुगन्ध का काम कर रहा था। जब भी वह अपनी कोमल उंगलियों को सितार के पर्दों पर रखती और कान उमेठ कर तारों को छेडती तो सोये हुए उद्गार जाग उठते और कानों के रास्ते मिठास और मस्ती का एक समुद्र श्रोता की नस - नस में व्याप्त हो कर रह जाता।"१७ पति और पत्नी एक दूसरे को बहुत चाहते थे।

एक दिन रामदयाल ने किसी 'महिला - अंक' में एक लेख पढ़ा। उसमें लिखा था, "स्त्री प्रेम की देवी है। वह अपने प्रिय पति के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर सकती है। वह उसकी पूजा कर सकती है, पर यदि उसका पति उसके प्रेम की अवहेलना करें, उसकी मुहब्बत को ठुकरा दें तो अवसर मिलने पर अपने प्रेम की तृषा बुझाने के लिए किसी दूसरी चीज को ढूंढ लेती हैं - चाहे वह चल हो वा अचल, सजीव हो या निर्जीव। यही प्रकृति का नियम है।"१८ रामदयाल ने इस बात की सत्यता परखनी चाही। वह उर्मिला के प्रेम की उपेक्षा करने लगा। बिना कारण उसे झिडकियाँ देने लगा। उर्मिला बहुत रोई, किन्तु वह नहीं पिघला। दोनों में अंतर बढ़ता गया। उन्हीं दिनों सामने के भवन में कोई युवक रहने लगा था। एक दिन उर्मिला के दुख भरे विरह गीत को उसने भी गाकर उत्तर दिया और फिर यह सिलसिला धीरे - धीरे बढ़ता गया। रामदयाल कई दिनों तक घर से बाहर रहने लगा और उर्मिला का उस युवक के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा। लाख कोशिशों के बावजूद वह अपने आप को सम्हाल न सकी। एक दिन

वह उर्मिला के घर आया। दोनों संगीत में डूब गये। युवक ने अपना प्रेम व्यक्त किया। उर्मिला अपने आपको रोक न सकी। दो दुखी हृदय मिले और युवक ने हंसते हंसते अपनी मूंछे और सिर के लम्बे बाल उतारे। उर्मिला ने देखा, तो वह रामदयाल था। रामदयाल हंसने लगा। वह अपनी अभिनय कला पर खुश था, किन्तु उर्मिला ऊपर अपने कमरे में भाग गयी। रामदयाल देखता रहा, "उसके विचारों का क्रम उर्मिला के कमरे से आने वाली एक चीख से टूट गया। भाग कर उपर पहुँचा। देखा, उर्मिला के कपडों को आग लगी हुई है और वह शान्त भाव से जल रही है।"१९

पति के उपेक्षा करने बावजूद भी अपने आपको पर - पुरुष के प्रति आकर्षित हुआ देख उर्मिला अपने - आप को क्षमा नहीं कर सकी। यहाँतक कि उसने आत्महत्या कर ली।

<u>नारी और मातृत्व</u>

स्त्री के व्यक्तित्व का चरम विकास माता के रुप में माना जाता है। इसी कारण विवाह का एक महत्वपूर्ण प्रयोजन संतानोत्पादन और वंश-रक्षा है। वस्तुत: वैवाहिक जीवन की पूर्णता संतान से होती है। इसके बिना दंपति जीवन में एक सूनेपन का अनुभव करते हैं। फिर खास कर नारी के लिए तो संतान की महत्ता और भी बढ जाती है, क्यों कि प्रकृति ने उसे संतान को जन्म देने और उसका पालन - पोषण करने के लिए ही चुना है। वह एक नये मनुष्य की सृष्टि करना चाहती है। लेकिन यह मातृत्व प्रत्येक नारी के नसीब में होता ही है, ऐसी बात नहीं है। इसके बहुत से कारण हो सकते हैं।

उपेन्द्रनाथ अश्कजी ने अपनी कहानियों में नारी की इस मातृत्व भावना के विविध पहलुओं को चित्रित किया है।

नारी के लिए मातृत्व सब कुछ होता है। वह अपने पुत्र से दूर रह ही नहीं सकती। अगर किसी बीमारी के कारण माता और पुत्र को अलग अलग रहना पडा तो उस

मां की अवस्था कितनी दयनीय होती है, इसका बहुत ही मार्मिक चित्रण 'नन्हा' कहानी मे देखने को मिलता है। शील बीमार है। उसे अपने इलाज के लिए, अपने घर को छोडकर, अपने छोटेसे मुन्ने को छोडकर, दूर शहर में अस्पताल में जाना है। वह सब कुछ छोड सकती है, पर फूल जैसे नन्हे को अपने से दूर रख नहीं सकती। पर वह मजबूर है। उसकी मन की अवस्था का वर्णन करते हुए लेखक कहता है ---

'अन्दर बिस्तर पर मेरा नन्हा फूल सुख की नींद सो रहा था। आंखों की पंखुडियां उसकी बंद थी। नन्हीं नन्हीं लटें मस्तक पर बिखर रहीं थीं। उसके बालों पर हाथ फेरते हुए धीरे धीरे मैं नें उसके गर्म गर्म ओठों को चूम लिया। बच्चा एक बार चौंका, फिर करवट बदलकर सो गया। कितनी बार उन बिखरे रुखे बालों पर प्यार का हाथ फेरा था, कितनी बार उन कोमल कपोलों को अनायास अपने ओठों से लगाकर भींच लिया था। लेकिन कभी कण्ठ यों आर्द्र न हो आया था, आंखें इस प्रकार न भर आयी थीं।"२०

सफर में भी शील को बार बार अपने नन्हे की याद आती है। अस्पताल में भीं वह उसी की याद में तडपती रहती है। एक नजर वह उसे देखना चाहती है। पर उसकी यह छोटीसी इच्छा भी पूरी नही हो सकी। अस्पताल के वातावरण में वह उब जाती है। 'वह चाहती है घर का अंगन, उसके चहकते हुए अपने बच्चे का शोर, उसकी किलकारियां, प्यार, रुदन और झिडकियों का संसार -- '२१ लेकिन जब शील यह जान जाती है कि नन्हे का यहां आना संभव नहीं है, तब वह उसके फोटो की चाह रखती है। उसकी कल्पना में ही खो जाती है। 'नन्हे के कई चित्र मेरी आंखो के सामने घूम गये। कल्पना कल्पना में मैं नें उससे बाते की, उसे प्यार किया, चूमा और उसे गले से लगाया।'२२ जैसे ही अपने नन्हे का फोटो शील के हाथों में आ जाता है, वह अपने भावावेग को रोक नही सकती। वह कहती है -- 'मैं नें उनके हाथों से फोटो छीन

लिया। एक मूढा उल्टा करके रखा था और उसमे बिठाकर उसका चित्र लिया था। प्यार के आवेग में मै नें उसे चूम लिया और फिर सीने से लगाकर लेट गयी। उस समय ऐसा लगा जैसे मै बहुत हल्की हो गयी हूँ, जैसे मीलों लम्बी यात्रा करने के बाद आराम से मंजिल पर पहुंच गयी हूँ।'२३

शील अस्पताल से जब वापस जा रही है, तब भी उसके दिमाग में अपने बच्चे का ही खयाल था। उसके लिए वह बहुत से खिलौने खरीदती है। वह मन ही मन सोचती है कि 'बच्चे के प्यार की कीमत तो मुझे अस्पताल ही जाकर मालूम हुयी। जीवन की समस्त ज्योति जब मौत की गहरी अंधेरी खाई की ओर बढने लगती है, तो एक नहीं नन्हीं-मुन्नी-सी किरण साथ-साथ चली आती है।'२४ स्टेशन पर पहुंचते ही सब से पहले उस की आँखें अपने नन्हे ललित को ढूंढती है। घर में भी वह उसे ही ढूंढती है। पर अब, सिर्फ उसकी एकमात्र फोटो बची है।

पुत्र कुपुत्र हो सकता है, पर मां कभी कुमाता नहीं होती। यह हमारी भारतीय परंपरा है। अपने पुत्र की भलाई के लिए मां अपना सबकुछ दांव पर लगाती है। उसके सुख में ही अपना सुख मानती है। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व ही नही होता। इस प्यार में, इस बलिदान में उसे एक प्रकार का असीम आनंद मिलता है। लेकिन जब यह बलिदान बेकार चला जाता है, उसकी कोई कीमत नहीं होती, तो मां को मौत के सिवा और कोई रास्ता दिखाई नहीं देता।

'मां' कहानी में जगत की मां अपना पूरा जीवन जगत की भलाई के लिए लगाती है, उसकी शादी के लिए कर्ज़ा निकालती है। अपने गहने गिरवी रखकर पैसे लाती है। जगत के पिता एकदम निकम्मे व्यक्ति होने के साथ-साथ शराबी और जुआरी थे। इसी कारण घर की सारी ज़िम्मेदारी जगत की मां को ही उठाना पडती थी। "जगत की मां एक असाधारण प्रकृति की स्त्री थी। वह न होती तो घर कब का चौपट हो गया होता और पंडित जी या तो यमुना के किनारे धूनी रमा लेते या जेल की रोटियां तोडते। कई

बार अवसर पडने पर जगत की मां उनके आड़े आयी थी। कई बार उसने उनके लिए रुपयों का प्रबंध किया था। साहस और हिम्मत की वह मूर्ति थी।"२५

जगत की मां ने पैसों का प्रबंध किया था, इसी कारण निश्चित समय पर जगत का विवाह हो सका, पर विवाह में वह उपेक्षित रही। उसकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं गया। उसे किसी बात की जानकारी भी नहीं दी गयी। परिणामत: वह निराश हो गयी। "जिस आशा के आधार पर आज तक सब कुछ करती आयी थी, वह आधार ही छिन गया। उल्लास की जगह फिर विषाद ने ले ली। अंतर में दु:ख का पारावार छिपाये वह सब काम करने लगी।'२६ -- उसकी मन:स्थिति का वर्णन करते हुए लेखक कहता है -- "जगत की मां प्रकट रुप में सब काम पूर्ववत कर रही थी। परंतु उसका मस्तिष्क और मन तो कहीं और ही थे। -- बडे यत्न से उसने आशा का जो दुर्ग बनाया था, उह उसे दहता हुआ प्रतीत हो रहा था। नींव हिल गयी थी, दीवारों में दरारें आ गयी थीं, अब गिरा कि तब गिरा। चेतनाहीन-सी, संज्ञाहीन-सी वह सब काम कर रही थी। -- वह जाग रही थी या सो रही थी, उसे कुछ भी मालूम नहीं था।'२७

दहेज़ में क्या क्या मिला है ? बिदा में क्या क्या रखा गया ? यह सब जगत की मां जानना चाहती है। पर जगत उसे कुछ नही बताता। ऐसे समय वह अपने आपको सर्वथा असहाय और बेबस महसूस करती है। जगत भी ससुराल से सीधे नौकरी पर जाने की बात करता है। यह सुनकर तो उसकी अवस्था और भी बुरी हो जाती है।

जगत की मां की अवस्था की वर्णन अश्क जी ने बडे ही विस्तार के साथ किया है --

'मां खड़ी-की-खड़ी रह गयी, जैसी उसकी समस्त शक्तियां शिथिल हो गयी हो। उसकी आंखों के आगे जैसे अंधेरा छा गया। वह देर तक वही खड़ी रही। जब तांगा दृष्टि से ओझल हो गया तब चुपचाप चली आयी। एक आह भी उसने नहीं भरी, एक निश्वास भी उसने

नहीं छोडा, जैसे प्राणों से भी प्रिय पुत्र की कृतघ्नता ने उसकी वेदना का गला घोट दिया हो। बैठक में एक हल्का सा कांच का सेट रखा हुआ था। कोई बीस रुपये का होगा। बस, इतने परिश्रम के बाद उसे यही देखने को मिला। उस समय उसे महसूस हुआ, जैसे विपत्तियों के अथाह सागर में वह एकाकी गोते खाने के लिए छोड दी गयी हो। जगत वापस न आयेगा, वह अमरकौर को कौनसे गहने देगी, नेगियों का नेग कैसे देगी, मुहल्लेवालों की छोटी-छोटी रकमे कैसे भुगतायेगी, जब वे सब उसे तकाज़ा करेंगे तो वह क्या उत्तर देगी ? जो कुछ आज तक नहीं हुआ वह अब हो कर रहेगा। उसे कितना अपमानित होना पड़ेगा। उसने अमरकौर से कहा था -- 'हाथ की पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती, संसार मे दयानत दारी का खात्मा नहीं हो गया।' अब वह उसे कैसे मुँह दिखायेगी। इस बेशरमी से तो मौत अच्छी। मां की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। सहसा उसे एक खयाल आया। पण्डित जी की अलमारी में अफीम की एक ड़िबिया रखी रहती थी। जब शराब के लिए पैसे न होते, वे अफीम से ही काम चला लेते थे। उसने बढ़कर ड़िबिया उठा ली। उसे खोला, खिल उठी, जैसे उसे विष नहीं, जीवनामृत मिल गया हो। एक बार ही सारी की सारी अफीम ड़िबिया से निकाल कर उसने मुंह में रख ली और कोच में धंस गयी। जीवन के सब दुख, सारी विपत्तियां, समस्त हारें एक एक करके उसकी आंखों के सामने घूमने लगी। एक विचित्र प्रकार की तन्द्रा उसकी आंखों पर छाने लगी।"२८

प्रत्येक स्त्री में मातृत्व की इच्छा होती है। भारतीय समाज में स्त्री को माता के रुप में ही पूजा गया है। ऐसी स्थिति में किसी स्त्री का मातृत्व से दूर रहना कैसे संभव हो सकता है। अगर उसके मातृत्व में कोई बाधा है तो वह अन्य मार्गों को अपनाती है। चाहे वे मार्ग अंध विश्वास के ही क्यों न हो।

'मोह मुक्त हो' कहानी की मिसेस सिंह मातृत्व के लिए तडप रही है।

उसका विवाह होकर पंद्रह साल बीत गये पर अब भी उसकी गोद खाली थी। ऐसी परिस्थिति में साधु-बैरागियों की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक है। मिसेस सरन की बात कहते हुए वह बताती है , "आज कल छिपी टैंक पर एक बडे पहुंचे हुए महात्मा आए हुए हैं। उनकी धुनी से एक चुटकी भर राख ने सहस्त्रों की मनोकामना पूरी कर दी हैं।"२१ इस बात पर उसके पती मेरठ के डिप्टी सुपरिटेण्डण्ट पुलिस, ठाकूर जे. सिंह कैसे विश्वास करते। वे इस बात को टाल देते हैं। तभी एक साधू इनके घर आता है और मिसेस सिंह को आशीर्वाद देता है कि उसकी मनोकामना पूरी हो जायेगी। दोनों भी साधू की ओर आकर्षित होते हैं, तभी बातों ही बातों में साधू उनसे पांच सौ रुपये निकालता है और भाग जाता है। मिसेस सिंह आज भी मां नही बन सकी। उसकी मातृत्व की इच्छा अधूरी ही रह गयी।

मनुष्य कभी कभी ऐसे कार्यों को चेतन अथवा अवचेतन मन से करता है, जिसके संपन्न हो जाने पर उसे कठीन पश्चाताप की अग्नि में जलना पडता है। पुन: उसी कार्य को उचित ढंग पर लाने में उसे उसकी अंत:भावनाएं प्रेरित करती है और वह उन्ही भावनाओं के अनुसार कभी कभी असंभाव्य कार्यो को करके अपनी अग्नि-परीक्षा देकर सफल होता है। मां का हृदय ऐसा ही होता है। वह संभाव्य को असंभाव्य और असंभाव्य को संभाव्य बनाता है। इस दृष्टि से अश्क की 'गोखरु' कहानी अपना विशिष्ट महत्व रखती है। कहानी की नायिका मलावी को अपने उन दिनों की याद आती है, जब उसकी कलाईयों मे बन्द, गोखरु, लच्छे और चूडियां पडी रहती थी। पती के कारोबार में घाटा पडने पर गोखरु छोडकर बाकी सभी गहने बिक जाते है। यह गोखरु सोलह तोले शुध्द सोने के थे। तब उसे अपनी प्रिय लडकी मंसा की शादी के दिन याद आते हैं। मंसा को बिदा करते हुए मलावी ने उसे अपने गोखरु भी दिये थे।

दो साल तक मंसा मां के घर नहीं आ सकी। परन्तु मलावी को जब गोखरुओं की

याद आती, तो उसके डिब्बे को देखकर ही मन को शांत रखने का प्रयास करती थी। अपनी लडकी को बुलाने के आग्रह में हो सकता है, वह उसी अपने प्रिय गहने को देखना चाहती हो। खैर, जो भी हो, जब दो साल बाद मंसा मैके आयी, तो गोखरु घिसकर पीतल जैसे ही हो गये थे। कुशल क्षेम के पश्चात मां ने लडकी को कोसना प्रारंभ किया, "यह गहनों की क्या हालत बनाई है तू नें ? इस तरह तो पराये का भी गहना नहीं पहना जाता। दो ही वर्ष में तू ने इतने कीमती गोखरु घिस दिये। पांच रुपये तो इनकी गढ़ाई में ही मैं ने दिये थे। मैल इनमें इतनी जमी हुयी, बर्तन मांजते, झाडू-बुहारी देते समय, तू उतारती थी न इन्हें। "३०

लडकी के दुख: दर्द को न पूछकर इस प्रकार आभूषण का रोना लेकर मलावी बैठ गई। परंतु जब आँखों के गढ़े और दुर्बल मन का कारण पूछा, तो मंसा ने बताया कि सास छोटे लडके की शादी के बहाने गहनें मांग रही थी, जो पुन: वापस नहीं दिये। इसीलिये त्यौहार पर जब कही गोखरु मुझे पहनने को दिये, तो मैं नें वापस नहीं दिये। इसी बात पर उसके पती नें उसे खूब पीटा। कहते हैं कि जब किसी व्यक्ति की नियत किसी देय वस्तु में रह जाती है, तो वह वस्तु उस व्यक्ति-विशेष के लिये गुणकारी सिध्द नहीं होती और हो सकता है कि मंसा को इसीलिये गोखरु नहीं फले, उल्टे जान से हाथ धोने की नौबत आ गई। इन्हीं गोखरुओं के कारण मंसा को ससुराल में मार पीट हो गई और वह इतनी बीमार रही कि मैके आते ही चल बसी। मलावी चाहकर भी नहीं रोयी। वह घिसटती हुई शव के पास आई और उसकी अकड़ी हुई कलाईयों से गोखरु निकाल लिए। मलावी के मन में कुछ क्षणों के लिये यह विचार भी आया कि लडकी का धन है। परंतु मृत लडकी का धन कैसा? कह कर अपने मन को शांत कर लिया। पुराने डिब्बे को झाडकर गोखरु रख दिये और तब दरवाजा खोलकर उसने एक चीख मारी। इसके बाद ग्यारह दिन तक मलावी रोती रही और ससुरालवालों को गालियाँ देती रहीं। पडोसन के पूछने पर कि-क्या गोखरु नहीं दिये? तो लडकी के फटे पुराने कपडों को दिखाकर कहा कि अब

दिया भी तो क्या ?

बारहवें दिन जब क्रिया कर्म करके वह गंवार स्त्री रात में लेटी तो उसके अपने मस्तिष्क पर भार-सा जान पडा। परंतु वह अशिक्षित औरत सूक्ष्म भावों का विश्लेषण करना क्या जाने? अंधों की तरह क्या स्वयं मलावी गोखरुओं के पीछे नहीं भागती फिरी? क्या वह स्वयं अपनी लड़की के मौत का कारण नहीं बनी? आद्यांत लड़की के प्रति ईर्षात्मक भाव क्या उसमें नहीं रहे? समधियाने जाने के पीछे क्या गोखरु की लालसा काम नहीं कर रही थी? उसकी आंखों के सामने लडकी के विवाह और अर्थी दोनो दृश्य आ गये।

सुबह जब पडोसिन भागवनी ब्राम्हणी ने अपने घर का दरवाजा खोला, तो मलावी को सामने पाया। उसका चेहरा श्वेत, बाल बिखरे और होंठ सूखे थे। मलावी ने कहा, 'अपनी बहू को बुलाओ'। और बहू के आने पर मलावी ने अपने दुपट्टे से गोखरु खोलकर लाल चूडे के आगे उसकी कलाईयों मे पहना दिये। सब चकित रह गये। तभी मलावी ने कहा, 'भाभी , यह मेरी मंसा के गोखरु हैं। मैं अपनी खुशी से इन्हें बहू को देती हूं। तुम मेरी लडकी के लिये प्रार्थना करना कि ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दें।'३१ -- और मेरी एक विनय है कि बहू जब भी हमारे घर आये, इन गोखरुओं को अवश्य पहनकर आये' और दरवाजा खोलकर मलावी निकल गयी।

इस कहानी के द्वारा अश्कजी ने मां के हृदय के एक अलग ही पहलू को प्रस्तुत किया है।

पुत्र के व्यक्तित्व को बनाने में मां का बहुत बडा हिस्सा होता है। मां की मृत्यु के बाद भी पुत्र उसे भूल नहीं सकता। 'ठहराव' कहानी का नागपाल अपनी मां से पूर्णत: प्रभावित है। इसी कारण वह कहता है कि "पिताजी को मैं नें जाना नहीं। मेरे होश सम्हालने से पहले ही परलोक सिधार गये थे। पर मां को तो

मैं नें देखा है। मैं जो कुछ हूँ, मां का बनाया हूँ।" ३२ इतना ही नहीं, वह अपने मां के गुणों से प्रभावित है। "शकुन, तुम मेरी मां की स्नेहशिलता की कल्पना नहीं कर सकती। दृढ थी लोहे की तरह और कोमल थी मोम की तरह। पिताजी की मृत्यु के बाद सारे कारोबार ही को उन्होंने नहीं चलाया, मुझे भी इस योग्य बनाया कि मैं अपने पूर्वजों का नाम कायम रखूं। फिर जाने कितने पडोसियों की उन्होने सहायता की, दया माया उनमें कितनी थी, मैं तुम्हे क्या बताऊं -- बतें छोटी छोटी हैं, पर मेरे मन पर उनकी अमिट छाप है।३३

स्त्री जब एक बार मां बन जाती है तो वह सब बच्चों की ओर इसी दृष्टि से देखती है। नागपाल की मां का हृदय भी इसके लिये अपवाद नहीं था। उनके घर का रसोइया शंकर का बेटा-पन्ना नागपाल की ही उम्र का था। दोनों साथ साथ खेलते थे। एक दिन खेल ही खेल में पन्ना की हाथों से कलकत्ते से मंगाया हुआ कट-ग्लास का बडा ही सुंदर कीमती सेट और फल-मेवों की प्लेटें चूर-चूर हो गयीं। सामान टूटने की आवाज़ सुनकर शंकर भागते हुआ वहां आया और उसने पन्ना को पीटना आरंभ किया। पर नागपाल की मां ने उसे रोकते हुये कहा -

"हें-हें! बच्चे को क्यों पीटते हो?' कहते हुए मां ने उसे रोका पर जब क्रोध से पागल शंकर बराबर उसे पीटता ही गया, तो पन्ना को उसके हाथ से छुड़ाकर दो थप्पड मां ने शंकर को जमा दिये, 'अरे, भगवान का शुक्र कर कि लडका मरते मरते बच गया! उल्टा तू उसे पीट रहा हैं।'

शंकर स्तंभित-सा खडा रह गया। मां कभी उसे डांटती तक न थी, पीटने की बात तो दूर रही। पर पन्ना को गोद मे लेकर मां जिस तरह से प्यार पुचकार रही थी, उसे देखकर शंकर की आँखे भर आयी। बोला, 'बहूजी, मै इसे काटकर रख दूंगा, आज इसने फलों को हाथ लगाया है, कल --'

'हां-हां ! काटकर रख देगा!' मां बोली 'चल, वह सब शीशे के टुकडे बटोर

डाल, बच्चे के पैरों मे चुभ जायेंगे। मै इसे समझा दूंगी।'

और मां पन्ना को गोद मे लिये हुए खाने के कमरे में आयी और उन्होने उसे मिठाई दी और समझाया कि, बिना पूछे चीज को हाथ नहीं लगाते और दो - एक खिलौने जो टूटने से बच गये थे, उसे दे दिये।' ३४

इस तरह हम देखते हैं कि नागपाल की मां का ममत्व सिर्फ अपने बेटे तक ही सीमित नहीं था, बल्कि वह उदार था। नागपाल अपनी मां के व्यक्तित्व से पूर्णत: प्रभावित था। इसे स्पष्ट करते हुये वह अपने पत्नी से कहता है, "शकुन, मां की दया, माया की इतनी घटनाएं मेरे दिमाग में सुरक्षित हैं कि मैं सुनाता चला जाऊं और वे खत्म नहीं होंगी। जिन लोगों से वे नफरत भी करती थी, अवसर पडने पर उनकी भी सगे-संबंधियों की तरह सहायता करती थी। मुझे मां से प्यार ही नहीं, अगाध श्रध्दा थी और मन ही मन मैं ने तय कर लिया था कि मां को जीते जी किसी तरह का दुख न दूंगा।" ३५

सास और बहू में हमेशा झगडे होते रहते हैं। इसी कारण नागपाल शादी ही करना नहीं चाहता। पर नागपाल की मां का स्वभाव अन्य स्त्रियों से अलग ही था। वह पुत्र और बहू के बीच में आना ही नहीं चाहती। उन दोनों की खुशी को ही अपनी खुशी समझती है। उनकी बडी इच्छा थी कि नागपाल जल्द शादी करें। पर नागपाल नें सास और बहुओं की लडाई के इतने किस्से सुन रखे थे कि जब जब मां शादी की बात चलाती, वे उसे टाल देते। जब भी ब्याह के लिये जोर देती, तब नागपाल कहते ,'मां, यदि बहू कहीं ऐसी वैसी आ गयी, तुम्हारा जरा भी निरादर उसने कर दिया, तो मैं सह नही सकूंगा।'

मां हंसती, ' बेटे, बहुओं के आते ही पुत्र मांओं को भूल जाते हैं।'

'मैं बहू लाऊंगा ही नहीं, ब्याह ही नहीं करुंगा!' मैं कहता।

मेरी मां बार बार कहा करती थी, "बेटे, तू मुझे नहीं जानता, मैं तेरे बहू को लड़ने का जरा भी मौका न दूंगी, और यदि तू बहू के साथ सुखी रहेगा, तो मै अलग रहूंगी, तो भी मुझे खुशी होगी।" ३६

नागपाल की मां जैसी मांएं अगर सबको मिल जाय, तो सास-बहू का झगडा ही मिट जायेगा और घर टूटनें से बच जायेंगे।

अपने पुत्र का सुख ही मां के लिये सुख होता हैं और उसे पूरा करने के लिये वह सब कुछ करती है। जो बात उसे नहीं मिली, उसका अभाव पुत्र के जीवन मे न हो, इसलिए मां हमेशा सचेत रहती है। 'पलंग' कहानी का नायक केशी मनोविज्ञान का अध्यापक है। उसकी शादी एक अच्छी, खूबसूरत लडकी से होती है। केशी की मां सुहागकक्ष सजानें मे लगती है। केशी चाहता है कि मां विश्राम करे। लेकिन मां बताती है, "मेरी शादी तो बेटे, कुछ यों ही हुयी थी। -- तुम्हारे पिता मामूली क्लर्क थे और कंपटिशन में अभी बैठे न थे। मै नहीं चाहती कि तुम्हारी बहू के मन में कोई साध रह जाय। फूलों का एक गजरा तक न आया था मेरे लिये। तुम ज़रा देखना, तुम्हारी बहू की सुहाग सेज कैसे सजाती हूँ।'"३७

उपरोक्त बातें एक मां अपने बेटे से कह रही है, जो कुछ अस्वाभाविक-सी लगती है। लेकिन इसके पीछे उसकी जो मानसिकता है, वह स्पष्ट होते ही यह संवाद अस्वाभाविक नहीं, बल्कि नितांत आवश्यक हो जाते हैं।

पुरुष द्वारा नारी का शोषण :

भारत में नारी की ओर देखने का प्राचीन दृष्टिकोण आदर्शात्मक होते हुए भी व्यावहारिक दृष्टिकोण एकांगी तथा स्वार्थी था। परिणामत: भारतीय नारी वैदिक युग के सम्मानपूर्ण पद पर अधिक दिनों तक प्रतिष्ठित नहीं रह सकी। धीरे धीरे उसकी सम्मानजनक और समतामय स्थिति का ऱ्हास होने लगा और वह सहचरी के महान

पद से दासी के निम्न स्तर तक पहुंच गयी। इसके सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक कारण थे। पुरुष की दृष्टि में नारी एक उपभोग्य दासी के रुप में, मनोरंजन के साधन के रुप में आ गई। पुरुष की शारीरिक शक्ति और स्वामित्व की भावना तथा नारी की शारीरिक निर्बलता अत: संरक्षण की आवश्यकता, उसकी आर्थिक पराधीनता और प्रेम में समर्पण भावना नें इसमें योग दिया। ईसा की तीसरी शती से हिन्दू नारी के लिए पराधीनता, निंदा, अशिक्षा, पर्दा-प्रथा, बालविवाह, विधवा विवाह निषेध, सती-प्रथा, सतीत्व आदि के एकांगी आदर्श और नैतिकता के दोहरे मानदण्ड द्वारा जो चतुर्दिक घेरा डाला गया, वह विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण दिन-ब-दिन जटिल होता गया।

अश्कजी ने अपनी विविध कहानियों के द्वारा नारी की ओर देखने का पुरुष का दृष्टिकोण, नारी की पराधीनता आदि को स्पष्ट किया है।

वेद, पुराण और शास्त्रों में पत्नी के पतिव्रत का नाना प्रकार से बखान किया गया है। अपनी अविचल पति-भक्ति के कारण सीता, सावित्री और पार्वती जैसी नारियां भारतीय समाज में श्रध्दा और सम्मान पाती रहीं। आदर्श भारतीय नारी पती को परमेश्वर मानती है। तन, मन और वचन से पति-परायणता ही पत्नी का आदर्श रुप है। पती चाहे एक बार भूल जाये या भटक जाये, पर पत्नी अपने कर्तव्य से कभी पीछे नहीं हटती। यही उसका सनातन आदर्श है, यही उसके सतीत्व का आदर्श है। अपनी सहज प्रवृत्ति और व्यक्तित्व को पती के जीवन और व्यक्तित्व से अभिन्न मानने के कारण ही पत्नी पती के दोषों के प्रति सहिष्णु रहती है। उसकी सदैव यही धारणा रहती है कि पति चाहे जैसा भी हो, उसकी अनुगामिनी बने रहना ही उसका कर्तव्य है।

'सतीत्व का आदर्श' कहानी की वासंती हमारे सामने सतीत्व का आदर्श प्रस्तुत करती है। उसका पति सलगीराम सिर्फ शराबी ही नहीं है, बल्कि वेश्या को लेकर घर में प्रवेश करता है। अपनी पत्नी को-वासंती को खरी खोटी सुनाते हुए,

उससे नौकरों की तरह काम करवाता है। उसपर बार बार चिल्लाता है, उसे गाली देता है। एक वेश्या के सामने वासंती को बार बार अपमानित होना पडता है। जब वेश्या अपने रुमाल से पसीना पोंछने लगती है, तब सलगीराम चीखते हुए अपनी पत्नी को आदेश देते हैं, "पंखा लाओ ! गर्मी है! तुम्हें इतनी तमीज नहीं क्या?' -- वासंती शांत रूप से पंखा करने लगी। उसको-वेश्या को ठंडक पहुंचाने के लिये। उसके हृदय की सुलगती हुयी आग धधक उठी, परंतु मुख पर वही शांति बनी रही। उस प्रशांत सागर की भांति, जिसके गर्भ में बडवानल धधक रहा हो, पर ऊपर उसका कोई आभास न हो।" ३८ सलगीराम जो साडी वासंती के लिये लाया था, अब उस वेश्या को देना चाहता है। पति के आदेश के अनुसार वह साडी वेश्या की ओर फेंक देती है। यह बात सलगीराम को अच्छी नहीं लगती। उसकी आँखों में खून उतर आता है और वह वासंती की गर्दन दबोच-कर उसे वेश्या के पांवों पर झुका देता है और फिर जोर से फर्श पर पटक देता है। इस घटना से वासंती का माथा फट गया। अत्याचार के निरंतर प्रहारों से अशक्त हो कर इसके संयम का बांध टूट गया। उसने कराहते हुए कहा, 'वेश्या ही को घर में क्यों न बैठा लिया, मेरी क्या आवश्यकता थी?' पत्नी का यह दुस्साहस सलगीराम सह नहीं सके और उन्होंने बूझी हुई लकडी से वासंती पर प्रहार किया, जिसमें उसकी जान चली गयी।

इस कहानी में हम देखते हैं कि पति प्रेम की अनन्यता के कारण पत्नी पति का बडे से बडा अत्याचार चुपचाप सह लेती है। कभी कभी उसे अपनी जान भी गंवानी पडती है - यही है सतीत्व का आदर्श।

पुरुष नारी को अपनी वैयक्तिक संपत्ति मात्र मानता है। उसे असहाय और अकेली देखकर उसपर किस तरह अनैतिक काम के लिए जबरदस्ती की जाती है, इस का चित्रण 'भिश्ती की बीबी' कहानी में देख सकते हैं। नानकदीन भिश्ती सुबह शाम

चौधरी खुदाबक्ष के घर पानी भरने जाता है। लेकिन जब वह बीमार हो जाता है, तब अपनी बीबी रक्खो को चौधरी के घर पानी भरने भेज देता है। "रक्खो बीस-बाईस वर्ष की सुंदर युवती थी। गेहुंआ रंग, आँखों में जवानी का मद, सुडौल शरीर, अंग अंग सांचे में ढला हुआ - नानकू की अंधेरी कुटिया का वह चिराग थी।" ३९ रक्खो को देखते ही चौधरी की नियत खराब हो जाती है। नानकू की दवा के लिये पैसे देकर वे रक्खो को खरीदना चाहते है। "क्षणभर के लिए उसका मन चौधरी साहब की सहृदयता से प्रभावित हो उठा। उन्हें दीन-दुखियों का कितना खयाल है! उनका भिश्ती बीमार हुआ तो स्वयं उसकी सहायता को तैयार हो गये। पर जब उसने निगाहें उपर उठाई, तो खड़ी-की-खड़ी रह गयी। चौधरी साहब की आँखो में कुछ ऐसीही बात थी। -- उसके हृदय में आशंका ने सिर उठाया और इसके साथ ही लज्जा की लाली उसके कपोलों पर दौड गयी। पहली बार उसने महसूस किया कि वह दुर्बल है और कोई उसे नुकसान भी पहुंचा सकता है।

वह वापस मुड़ने को ही थी कि चौधरी साहब नें उठकर उसका हाथ थाम लिया और जैसे कंठ में बोले, 'ले जाओ, डरती क्यों हो?'

'मैं ले नहीं सकती।' उसने सिर झुकाकर कहा। उस समय वह चौधरी साहब की आंखों से आंखें न मिला सकी।

चौधरी साहब की आंखों पर वासना का पर्दा छाया हुआ था। उन्होंने एक हाथ से उसकी मशक को परे फेंका और उसे अपनी ओर खींचते हुए, कांपते सूखे स्वर से कहा 'डरती क्यों हो?' उसी समय उनके साईस ने आकर धीरे से आकर दरवाजा बंद कर दिया और बाहरसे कुंडी चढा दी। चौधरी साहब ने उसे कह रखा था। उनके कांपते हुए शरीर को, उनके मुख को, उनकी आंखों की पैशाचिक चमक को देखकर रक्खो कई कदम पीछे हट गई। उसकी आंखे क्रोधसे लाल हो रही थी। खुरखुर करनेवाली मिसकिन बिल्ली अब निर्भीक सिंहनी बन गई थी। चौधरी साहब ने अपनी वासनायुक्त आंखों रक्खों की जलती

हुई आँखों में डाल दी और मदमस्त शराबी की भांति आगे बढे।

रक्खो ने एक बार बेबसी की आंखो से इधर उधर देखा और फिर इस जोर से चौधरीसाहब को लात जमायी कि वे लुढकते हुए चारपाई पर जा पडे। इसने कमरे से भागना चाहा पर किवाड बंद थे। चोधरीसाहब चोट खाते हुए नाग की भांति उठे। एक क्षण के लिये उन्होंने रक्खो पर काबू पा ही लिया था कि रक्खो ने अपनी शरीर की समस्त शक्तियों से उन्हें धकेल दिया और हांफते हुये कहा, 'खुदा ने धनी - निर्धन में इज्ज़त का एक सा अहसास पैदा किया है। गरीबों को भी अपनी इज्ज़त उतनी ही प्यारी है, जितनी अमीरों को। यह कहते कहते उसने किवाडों पर जोर जोर से धक्के दिये। साईस नें डर के मारे दरवाजा खोल दिया और इससे पहले कि चौधरीसाहब उठते, रक्खो भाग गयी। उस समय उसे किसी बात का ज्ञान नहीं था। ऐसे भाग रही थी, जैसे जेल के दरवाज़े तोडकर भागी हो। ४०

अपने अनन्य प्रेम और निष्ठा के कारण ही पत्नी सदा अपने पति के प्रति समर्पित रहती है। वह कठीन से कठीन परिस्थितियों में भी, विवशता की चरम सीमा में भी पति के अतिरिक्त किसी भी अन्य पुरुष को अपने मन में स्थान नहीं देती। यही कारण है कि आदि काल से भारतीय धर्म ग्रंथों में सती और पतिव्रता नारियों की प्रशंसा के गीत गाये गये हैं। नारी का तन किसी कारण वश कभी पराजित भी हो जाये, उसका मन सदा पति के ही नाम की माला जपता है। इसी घटना का वर्णन 'पत्नीव्रत' कहानी में लेखक ने किया है।

लक्ष्मी की शादी खन्ना साहब से हो गयी है। वह उनकी दूसरी पत्नी है। खन्ना साहब पलभर के लिए भी लक्ष्मी को अपनी आंखों से ओझल होने नहीं देते। उनकी दृष्टि में तो लक्ष्मी स्वर्ग की देवी है, जिसकी वे पूजा करते हैं। अपनी पहली पत्नी के बारे में कहते हैं कि, वह तो गंवार और मूर्ख थी, लक्ष्मी को पाकर

धन्य हो गये। पर दुर्भाग्य से लक्ष्मी को यक्ष्मा हो गया और उसे अस्पताल में दाखिल करना पडा। सप्ताह में एक दिन खन्ना साहब उसे मिलने आते। उनके आने के इंतज़ार में वह बाकी के छ: दिन हंसते काटती थी। अस्पताल में आते समय लक्ष्मी अपने साथ सब गहने लायी थी। लेकिन खन्ना साहब सब गहने लेकर गये हैं, उनका लक्ष्मी से मिलना कम हो गया है। अपने जीवन के अंतिम समय में भी लक्ष्मी के होठों पर पति का ही नाम था। वह कहती है, "मिस साहब, जाने वे क्यों नहीं आये? इस बार तो उन्हें दो सप्ताह हो गये। इस समय इच्छा होती है, काश वे मेरे पास होते।" फिर स्वयं ही हंसकर बोली "मिस साहब, मैं भी कितनी मूर्ख हूं! वह न भी आये तो भी क्या वे मुझसे दूर हैं? मेरे दिल मे तो हर वक्त उनकी तस्वीर रहती है। और मैं ही उनसे कौन दूर हूं? कई बार तो उन्होंने कहा है - 'लक्ष्मी,तुम तो हर वक्त मेरे पास रहती हो। कई बार काम करते करते तुम्हारा खयाल आ जाने से गलती हो जाती है।'इसके बाद वह बेहोश हो गयी थी। मरते समय भी जब क्षण भर के लिए उसकी बेहोशी टूटी, तो अपने पति का नाम उसके मुंह पर था।"४१

पति की याद में, उसके इंतजार में मृत्यु का स्वागत करने वाली लक्ष्मी चली जाती है। जिस पति को वह देवता मानती है, वे खन्ना साहब उसके अंतिम समय में भी उसके पास नहीं होते, बल्कि तीसरी शादी करने अपने घर चले जाते हैं। एक ओर पति को परमेश्वर माननेवाली स्त्री तो दूसरी ओर स्त्री को उपभोग का साधन समझनेवाला पुरुष है।

प्राचीन काल से हमारे समाज की यह मान्यता रही है कि नारी एक बार जिस पुरुष से प्रेम करती है, जीवनभर उसी की होकर रहती है। उसके जीवन की सार्थकता ही इस मिलन में है। प्रेम और विवाह ही उसका जीवन होता है, जब कि पुरुष के लिए प्रेम और विवाह जीवन का एक अंग होता है। इसी कारण पति के वियोग मे पत्नी तड़पती

रहती है, उसकी याद में दिन बिताती है। पर पुरुष पहली पत्नी की मृत्यु के बाद तुरंत दूसरी शादी करने के लिए तत्पर होता है, और दूसरी के बाद तीसरी। पुरुष के लिए स्त्री जीवन का एक साधन है, जब कि स्त्री के लिए पुरुष सब कुछ।

'मर्द का एतबार' कहानी में एक ही पुरुष की तीन - तीन शादियों की चर्चा है। प्रोफेसर गुप्ता अपनी पहली पत्नी शांता की मृत्यु के कारण चिंतित हैं। वे कहते हैं, "कभी जब मै सोचता हूं कि शांता के निधन में मैं नें कितनी बडी निधि खो दी है, तो मन अनायास भर-सा आता है।"४२ वे अपने वैवाहिक जीवन की सुखद मधुर घटनाएं सुनाकर शांता जी की, सुन्दरता, सौम्यता, हमदर्दी और समझदारी का बखान करते नहीं थकते थे। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद वे शकुन्तला से शादी करते हैं। शांता के सब सदगुणों को भूल जाते हैं और शकुंतला की ही गुणगाथा कहते रहते हैं। "शकुन्तला जी की उपस्थिति के प्रकाश से मानो वे ओत - प्रोत थे। उनकी प्रत्येक भंगिमा, प्रत्येक स्मिति और बात का बिम्ब प्रोफेसर साहब के मुख पर झलक उठता था।"४३ अब प्रोफेसर साहब शकुन्तला के गुणों का बखान करते हुए शांता के दुर्गुणों की चर्चा करने लगे। लेकिन दुर्भाग्यवश शकुंतला प्रसव में ही चल बसती है। उसके चले जाने के बाद एक महिने के अन्दर ही प्रोफेसर साहब सीताजी का ज़िक्र करने लगते हैं। इससे स्पष्ट है कि पुरुष के लिए स्त्री एक साधन मात्र है- उसकी वासना तृप्ति का केन्द्र है। जहां स्त्री पुरुष के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए इच्छुक होती है, वहां पुरुष उसे सिर्फ उपभोग का यंत्र मानता है। पुरुष का स्त्री की ओर देखने का एकांगी दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।

नारी का वेश्यापन

प्रत्येक सुसंस्कृत समाज के लिए यह शर्म की बात है कि वह अपने एक महत्वपूर्ण अंग, नारी जाति को घृणित व्यवसाय करने के लिए बाध्य करता है।

दुनिया की कोई भी नारी अपनी इच्छा से वेश्या नहीं बनती, बल्कि परिस्थिति उसे वेश्या बनने के लिए बाध्य करती है। किसी कारण वश एक बार पतित और पथभ्रष्ट होनेवाली नारी हमेशा के लिए पथभ्रष्ट नहीं होती, पर समाज उसे पतित ही मानता है। उसे फिर सुधारने का मौका ही नहीं देता। क्यों कि हिन्दू समाज निर्मम और कठोर होने के कारण नारी की ओर वह सहृदयता से नहीं देखता। हमारा समाज पुरुष प्रधान है, इसी कारण वह अपने दोषों की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता, पर नारी की छोटी सी भूल को भी स्वीकार नहीं करता। ऐसी हालत में अबला असहाय और मजबूर नारी के सामने दो ही मार्ग बच जाते हैं - या तो वह अपने जीवन को समाप्त करें, या जीने के लिए शरीर का सौदा करें।

'फर्लो' कहानी में अश्कजी ने वेश्या की दयनीय अवस्था का चित्रण किया है और साथ ही उनकी ओर देखने का पुरुष का वासनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। कहानी नायक चेतन ट्रेन से सफर कर रहा है। उसी समय बीच के ही स्टेशन पर कुछ स्त्री पुरुष गाडी में आते हैं। उनकी ओर देखते से ही चेतन को लगता है कि ये लोग सुसंस्कृत नहीं हैं।

"स्त्रियों के कपडे कुछ साफ और भडकीले थे। दो युवा थी और एक अधेड़। किंतु दोनों अपनी उमर से ज्यादा लगती थीं और संयम हीनता ने उनके चेहरे पर ऐसी रेखाएँ बना दीं थीं, जो सस्ते पावडर और रुज के बावजूद स्पष्ट दिखायी देती थी।"४४

आम तौर पर भारतीय नारी सिगरेट नहीं पीती। इसी कारण जब ये स्त्रियां सिगरेट पीने लगती हैं, तो चेतन को अचरज होता है। इन स्त्रियों की आंखों में चेतन कुछ ऐसी संकोच-हीनता देखता है, जो उसने कभी जालंधर के कोतवाली बाजार की वारांगनाओं के नयनों में देखी थी। ये स्त्रियां बडी बेबाकी से अपनी कोठरियों के आगे पाउडर थोपे बैठी रहती और गांवों से नगर को आनेवाले जाटों के साथ अत्यंत

अश्लील और भद्दे मज़ाक करती।

तभी चेतन देखता है कि वहां बैठा एक मुसाफिर उन पहाडी स्त्रियों की ओर अत्यंत भूखी निगाहों से देख रहा है। उसका वर्णन अश्कजी ने इस प्रकार किया है ---

"अधेड अमर, नुकीली खिचडी दाढी, नाक से नीचे से कटी हुयी शरयी मूंछे, नंगा सिर, खरखरे खिचडी बाल, आंखों में तीव्र भूख तथा वासना की झलक।"४५

X X X

"तभी गाडी एक स्टेशन पर रुकी। वह व्यक्ति उठकर मिठाई ले आया और दोना लिए हुए उसके पास जा बैठा। अपने मैले, पीले दांत निकालते हुए उसके एक हाथ से मिठाई का दोना उसकी ओर बढाया और दूसरे से उसके दोनों घुटनों को लेकर अपनी बगल में भींचा और उसकी आंखो में वासना की ज्वाला लपलपाने लगी।"४६

लेकिन जैसे ही वह स्त्री उस व्यक्ति के व्यवहार का विरोध करती है, वह व्यक्ति उसे वेश्या कहते हुए गाली देता है और 'खा-कमाकर फलों पर जा रही है' ऐसा कहता है।

"फलों' यह शब्द सुनते ही उन वेश्याओं के प्रति एक विचित्र सहानुभूति से उसका मन प्लावित हो उठा। साल भर के थके, टूटे, शिथील अंग लेकर, अपने शरीरों को बेचकर उन्हें भूखे, हिंस्त्र पशुओं की दया पर छोडने के बाद, ये बेचारी क्लान्ति की मारी, कुछ आराम करने जा रही हैं। और यह भूखा व्यक्ति -- पाजी-- ।"४७

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के बारे में जानकारी न होनेवाली छोटी छोटी लड़कियां भी वेश्या व्यवसाय में किस प्रकार आ जाती है इसका वर्णन 'उबाल' कहानी मे आ जाता है। कहानी नायक चंदन एक युवक है। उसके मन में स्त्रियों के प्रति

आकर्षण पैदा होता है और इसी आकर्षण के कारण वह वेश्याओं की बस्ती में चला जाता है। वहां की गंदगी तथा बेबसता का वर्णन अश्कजी ने इस प्रकार किया है -

"उसी समय एक कोठरी के आगे कुछ अंधेरे में बैठी हुयी एक मोटी, थलथल, पिलपिल स्त्री ने उसकी मुश्किल आसान कर दी। उसके पास दो छोटी छोटी लड़कियां फर्श पर ही दरी बिछाए लेटी हुयी थी -बिलकुल कासनी ही की वयस की-'आओ आओ, इधर आओ।' प्यार से उसने कहा।

चन्दन बढ़ा।

बडे धीमे -भेद भरे स्वर में उसने कहा, 'आओ, सोचते क्या हो? बारह आने -- '

इशारा उसी कोठरी से बाहर बैठी हुयी स्त्री की ओर था, जो केवल एक काली बनयान और काली साडी पहने लोहे की कुर्सी पर बैठी थी, जिसकी बगलों में बाल तक दिखायी देते थे और जिसकी छातियां ढ़ली हुयी ककडी की भांति लटक रही थी।

चंदन ने उसके पास धरती पर अधलेटी - अधबैठी लडकी की ओर आकांक्षा भरी दृष्टि से देखा। उसकी नाक में छोटी - सी नथ भी थी और उसने जेठू से सुना था कि इन लोगों में यह नथ कौमार्य का चिन्ह होती है।

समझकर मोटी स्त्री ने कहा 'यह तो अभी बहुत छोटी है, यह अभी ---यह सब क्या जाने?'

चंदन के मस्तिष्क मे कच्ची नाशपातियां घूम गयी, फिर कासनी और फिर कच्ची नाशपातियां।

और मोटी स्त्री ने कहा, 'दो रुपये लगेंगे।'

चंदन चुप रहा। वह कहना चाहता था, 'दो रुपये बहुत हैं।' तभी मोटी स्त्री ने कहा , 'अच्छा तो ड़ेढ सही। अभी तो नथ भी नहीं उतरी।'

चंदन की नसों में दूध उबलने लगा। उसका शरीर गर्म होने लगा। दूसरे

क्षण वह गंदे, मैले पर्दे के अंदर चला गया और उसके पीछे - पीछे लैम्प और उस लड़की को लिए हुए वह मोटी स्त्री ! "४८

पुरुष के अन्याय और अत्याचार के कारण ही नारी को कभी कभी वेश्या बनना पड़ता है। उसकी सुंदरता की ओर वासना भरी नज़रों से देखा जाता है। उसके यौवन को लूटकर उसे बाजार की वस्तु बनाया जाता है। 'वह मेरी मंगेतर थी' कहानी की मुर्तू की हकीकत इससे अलग नहीं है। गांव की भोली - भाली युवती मूर्तू का एक युवक से परिचय हो जाता है। आपसी परिचय की परिणति प्रेम में हो जाती है और घरवाले यह प्रेम देखकर उन दोनों का विवाह निश्चित करते हैं। मुर्तू से उसका प्रेमी मिलना चाहता है। कोई न कोई बहाना बनाकर वे दोनों एक दूसरे से गांव के मेले में मिलते हैं। पर उसका यह मिलन दारोगा साहब से देखा नहीं जाता। उन्हे लगता है कि यह कोई बाजारी औरत है। यह सुनते ही प्रेमी उसका विरोध करता है। दारोगा और अन्य सिपाहियों के साथ उसका झगडा होता है। प्रेमी को इतना पिटा जाता है कि वह बेहोश हो जाय। उसपर मुकदमा चलाकर उसे ड़ेढ साल के लिए जेल भेज दिया जाता है। जेल से बाहर आने के बाद उसे मुर्तू की स्थिति का पता चलता है। इसे स्पष्ट करते हुए वह कहता है --

"गांव मे आने पर मुझे ज्ञात हुआ कि मुर्तू भी उस मेले से नहीं लौटी। वह अवश्य ही उस दारोगा और दूसरे कर्मचारियों की पाप वासनाओं का शिकार बनी होगी। इस बात का मुझे पूरा निश्चय था और यह सन्देह सत्य भी साबित हुआ। जब एक साल बाद स्वस्थ होने पर, मै लाहोर गया तो मै ने धोबी मण्डी में मुर्तू के दर्शन किये। वह एक बहुत छोटे से घिनौने मकान मे रहती थी। मै उसके पास कई घण्टों तक बैठा रहा। उसने मुझे अपनी मर्मस्पर्शी कहानी सुनायी। किस तरह उसकी सुंदरता पर मुग्ध होकर दारोगा अथवा दूसरे कर्मचारियों ने उस पर अनर्थ तोडे और

किस प्रकार अपने अत्याचारों का भण्डा-फोड होने के भय से उन्होंने उसे छोड दिया, किस प्रकार अपने सतीत्व को लुटाकर वह अपने गांव में जाने का साहस न कर सकी और किस प्रकार पेट की ज्वाला ने उसे धोबी मंडी में आ बसने को बाध्य किया।"४९

इससे स्पष्ट होता है कि दारोगा की हवस का शिकार होने के कारण ही मुर्तू अपने आप को अपवित्र मानती है और वेश्या बनकर रहती है। गांव की एक भोली-भाली युवती पुरुष के अत्याचार का शिकार होने के कारण बाज़ारु औरत बनती है। जब मुर्तू को उसका प्रेमी मिलता है, तब उसे रेशमी रुमाल देते हुए वह इतना ही कहती है कि ---

"आज तीन साल से मैं नें इसे सम्हालकर रखा है, परंतु यह पवित्र रुमाल अब मुझ-सी अपवित्र नारी के पास नहीं रखना चाहिए। इसे अपनी नव वधू को भेंट कर देना।"५०

पुरुष के द्वारा वेश्या बनाये जाने के बाद भी वह अपने प्रेमी के मंगल की ही कामना करती है, यही नारी की महानता है।

<u>नारी और यौन समस्या</u>

भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति में मूलभूत अंतर है। भारतीय सभ्यता अध्यात्म प्रधान है, जब कि पाश्चात्य सभ्यता भौतिकवादी है। भौतिकवादी सिध्दांत त्याग की अपेक्षा भोग को महत्व देता है। ऐसे ही समय अंग्रेजी शासन की स्थापना के परिणाम स्वरुप भारत में पाश्चात्य सभ्यता अपनी अच्छाईयों और बुराईयों के साथ आयी। अपने भौतिकवादी प्रगति के कारण वह भारत के जनजीवन पर हावी हो गयी। आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के कारण स्त्रियां भी पुरुषों के साथ-साथ घर से बाहर काम करने लगी। शिक्षा के परिणाम स्वरुप नारी को अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का अहसास हुआ। परिणामत: युगों से पीडित और दलित नारी नें पुरुष के विरुध्द

विद्रोह किया और वह पुरुष के प्रतिद्वन्दी के रुप में सामने आयी।

यद्यपि प्राचीन वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक भारत में नारी को देवी के रुप में प्रतिष्ठित किया जाता था, पर प्रत्यक्ष व्यवहार में उसकी स्थिति एक गुलाम जैसी थी। वह भी एक इन्सान है, उसे मन, भावना, इच्छा या अभिलाषा हो सकती है, इसका विचार भी करने की पुरुष प्रधान समाज ने कभी जरुरत नहीं समझी। परिणामत: २० वीं शताब्दी में भारतीय नारी ने विद्रोह किया। अपने सामाजिक, पारिवारिक स्थान को निर्धारित करने के साथ-साथ उसने अपनी मानसिक तथा शारीरिक पीडा को भी अभिव्यक्ति दी। फ्रायड ने नारी की अनेक समस्याओं के मूल में उसकी यौन समस्या को प्रधानता दी। अत: अश्क ने भी अपनी कहानियों के द्वारा नारी की यौन समस्याओं को चित्रित किया है।

अश्क ने गाल्जवर्दी, चेखव, तुर्गनेव, बूनिन, मैक्जिम गोर्की और दास्तवस्की की उत्कृष्ट कहानियों का अध्ययन किया था। इसका प्रभाव भी अश्क पर स्पष्ट रुप से परिलक्षित होता है। यही कारण है कि अश्क भावना के माध्यम से यथार्थ जीवन की झांकी न देकर मनोविश्लेषण, हास्य-व्यंग्य तथा प्रतीकों को माध्यम बनाकर यथार्थ का चित्र खींचते हैं। यद्यपि 'बेबसी' के यथार्थ को सामाजिक यथार्थ की संज्ञा से विभूषित नहीं किया जा सकता है, फिर भी यह व्यक्ति सत्य अवश्य है। यह एक ऐसा सत्य है, जिसकी ओर से दृष्टि फेरी नहीं जा सकती।

'बेबसी' कहानी में आया की यौन वासना नहीं, बल्कि उसकी करुणा अधिक प्रभावोत्पादक लगती है। बेबसी केवल सैक्स भावना की नहीं है, उसका एक सूक्ष्म रुप भी है, जिसकी तृप्ति उन स्थितियों में असंभव है। साथ ही वह दृश्य ,जो इस बेबसी को और भी उत्तेजित करता है, वह है आया का रात के अंधकार में 'सा ब--सा ब' चिल्लाना।

"घर में काम के लिए रखी हुयी आया को जब लाल ने देखा,तो वह उसे जरुरत से ज्यादा कुरुप लगी - पतली - दुबली, सड़ी - सूखी, कंधे किंचित झुके हुए और दांत कुछ बाहर को निकले हुए लगता था, जैसे उसने तीन - चार दिन से फ़ाका कर रखा है और कपडे हफ़्तों से नहीं धोये।"५१ पहली मुलाकात में ही वह लाल को बंदरिया जैसे लगी। पर कुछ ही महिनों मे भर-पेट भोजन, निश्चिन्तता, और आराम से आया का शरीर भर आया था। गर्मियों के दिनों में लाल पंचगनी के सेनेटोरियम में दाखिल हो गया और उसकी बीबी आया और बच्चे के साथ एक बंगले में रहने लगी।

एक दिन मिसेस लाल अपने भाई की शादी में चली गयी। तब बंगले में लाल और आया दोनों ही रहे। आया लाल का ध्यान रखने लगी। स्नान के लिए गरम पानी, वक्त पर चाय और नाश्ता तथा खाना तैयार करके वह साब की राह देखती। रात के समय आया ज़िद करके लाल के ही कमरे में सो जाती है। किसी बात पर जब लाल उस पर गुस्सा करता है, तब वह प्यार का हाथ उसके चेहरे पर फेरते और पुचकारते हुए कहती है,"तुम गुस्सा नहीं करो साब, हम अभी जाता है।"

दिन भर लाल उखड़ा - उखड़ा - सा रहा। उसके मुख पर प्यार का हाथ फेरते हुए आया के चेहरे पर जैसा भाव था, जाने उसमें क्या बात थी, लाल ने फिर न आया से आँख मिलायी, न उसे अपने निकट आने का अवसर दिया।

दूसरे दिन रात को आया लाल के बिस्तर पर आकर बैठती है और लाल के सामने शादी का प्रस्ताव रखती है। यह सुनते ही लाल को क्रोध आ जाता है। पर अपने आप को संभालते हुए उसने उसकी पीठ को थपथपाते हुए कहा,"तुम पागल हो, मैं तो बीमार आदमी हूँ, मुझे तो मेमसाब के पास गये --- "

आया हँसी, "हम को सब मालूम है, तुम ठीक है।" और हाथ पीछे फैलाकर वह रजाई पर ऐसे लेट गयी कि रजाई के अंदर लाल की टांगे उसके भार से दब गयी।

तब उसकी पीठ के नीचे हाथ देकर लाल ने उसे जोर से उठा दिया।

"तुम पागल हो गयी हो। जाओ, जाकर सो जाओ।" और उसे बरबस उसके बिस्तर की ओर धकेल, टेबल - लैम्प बुझा, रज़ाई ओढ, वह सो गया।

"सा - -- ा -- ा -- ा -- ब ! "

अपने बिस्तर पर से आया की लम्बी सांस - जैसी सन्नाटे को भेदती आवाज आयी। " ५२

"उदमाती आया बराबर कराह रही थी। झल्लाकर लाल ने टेबल -लैम्प जलाया। उछलकर वह उठा और आया को लांघता हुआ उसके सामने जा खड़ा हुआ।

आया चित लेटी थी - हाथ और टांगे फैलाए - प्यासी, उबड - खाबड धरती की तरह बेबाक और निरलज्ज!

अनिश्चित बादल - सा वह तना खड़ा रहा कि सहसा वह उसके घुटनों के बल बैठ गया।

"देखो आया, तुम उमर में मुझ से बड़ी हो। तुम्हें कहीं गलती लगी है। मैं ने तुम्हें कभी इस रुप में नहीं देखा। मैं बीमार हूँ। मै कुछ नहीं कर सकता।"

"सा -- ा -- ा -- ा -- ब !"

दबी कराहट - सा स्वर - न जाने कैसी तृष्णा थी उस स्वर में --- हाथ से उसने अपने सीने को दबा लिया, जैसे वह फटा जा रहा हो, आँखें उसकी फैल सी गयी। लाल घबरा गया। क्या आया को फिट आ रहा है -- "आया, क्या बात है, क्या तुम्हें दौरा पड़ता है ?"

"हमारा जी घबराता है। हम मर जायंगा !"

लाल की समझ सोच की शक्तियाँ जवाब दे गयी। घबराहट में उसने उसके दिल पर हाथ रखा। वह पूछना चाहता था -- "तुम्हें कहां तकलीफ है?" पर आया के ब्लाउज

का टिच बचन खुला.। हथेली का ज़रा - सा जोर पडते ही ब्लाऊज खिसक गया। अचकचा कर उसने हाथ उठाना चाहा कि आया ने अपना दायां हाथ उसपर रखकर उसे दबा दिया। लाल ने बरबस अपना हाथ खींचना चाहा, तो आया ने अपना बायां हाथ उसकी गर्दन में ड़ाल, उसके सिर को अपने सीने से भींच लिया।

'आया तुम पागल हो --- ' कहने के लिए गर्दन को छुड़ाने का प्रयत्न करते हुये, उसने मुंह खोला ही था कि आया ने दूसरा हाथ भी उसकी गर्दन में डाल कर उसे फिर भींच लिया। --- वाक्य पूरा नहीं हुआ -- लाल ने मुंह में कुछ अजीब-सा स्वाद पाया - उसके नथुनों में साबुन और पाउडर की मिली - जुली सुगंध बस गयी। शायद आया के कोई दांत भी लग गया क्यों कि उस के सीने पर उसने लहू सिमटा देखा।

पूरे जोरसे वह चिल्ला उठा -- 'आया ! ' " हम तंग नई करेंगा साब - हम तंग नई करेंगा --- हमारा जी घबराता है।"

-- झुंझलाकर उसने सिर को छुड़ाना चाहा। आया ने उसे नहीं छोडा। बाये हाथ से उसके सिर को अपने सीने से भींचे, वह दाये हाथ से उसके बाल सहलाती रही।

-- अनिश्चित बादल बरसा नहीं, पर वह तृषित धरती अपने सूखे पहाड को ले उससे चिमट गयी और उस स्पर्श मात्र से जैसे उसके सोते फूट चले।

-- आया ने बडी कोमलता से उसे अपने साथ चिमटा लिया। उसकी अपनी पकड ढीली हो गयी। उसके अंग शिथिल हो गये। --

-- दुसरे क्षण लाल आया की बाहु पाश से मुक्त था और वह एक ओर को लुढ़क गयी थी।"५३

यह कहानी पूर्ण यथार्थवादी है। बेबसी आया की ही नहीं वरन् ध्यान दें, तो लाल की भी लगती है। आया यौन वासना की ही तृप्ति नहीं चाहती वरन् वह तृप्ति, जो केवल लाल के माध्यम से हो। लाल भला उस कुरुप पर क्यों डिगने लगता?

इस प्रकार सब से मार्मिक एवं कोचनेवाली यदि कोई चीज है, तो वह है इंसान का रूप धरनेवाली कुरुपा की अथाह बेबसी, जो एक सुंदर, सुसंस्कृत लेकिन बीमार पुरुष को चाहने लगती है।

विद्रोही नारी

विद्रोहात्मक चरित्रों की अवतारणा व्यक्तिगत और सामाजिक प्रश्नों के कारण होती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है, अत: उसकी प्रत्येक समस्याएं भी समाज से संबंधित होती हैं। इसलिए व्यक्तिगत विद्रोह भी अप्रत्यक्ष रुप से समाजगत हो जाता है। यह विद्रोह प्राय: सामाजिक अन्याय, विषमता और दमन के कारण होता है। अश्कजी ने अपनी कहानियों में वैयक्तिक विद्रोह को उभारा है। 'भिश्ती की बीबी' कहानी की नायिका रक्खो का चरित्र ठोस विद्रोहात्मक धरातल पर खडा है। " रक्खो बीस - बाईस वर्ष की सुन्दर युवती थी। गेहुंआ रंग, आँखों में जवानी का रंग, सुडौल शरीर, अंग - अंग सांचे में ढला हुआ - ननकू की अंधेरी कुटिया का वह चिराग थी। रक्खो को शहर की दुनिया से कोई सरोकार न था। वह गांव ही में पैदा हुयी, पली और परवान चढी थी। खुली हवा में खेलती, खुली हवामें सांस लेती।"५४

रक्खो अपनी निर्धन दुनिया में ही खुश थी। उसे धोखेबाजी की चुपडी से, दयानतदारी की सूखी अधिक पसंद थी। जब रक्खो को पता चलता है कि उसका पति ननकू चरस पीता है, तो वह उसका प्रतिवाद करती है। ऐसी स्थिति में जब ननकू पूछता है कि कुछ खाने को है या नहीं? तब रक्खो जैसे तलवार खींचते हुए उत्तर देती है, "तुम नशा करो, तुम्हें खाने - पीने से क्या ?"५५

परंतु जब उसी ननकू की तबियत खराब हो जाती है, तो वह बिना खाये, पिये या आराम किये अपनी सुध-बुध खोकर उसकी सेवा में लग जाती है। चौधरी के घर मश्क

लेकर पानी भरने जाती है। लेकिन जब चौधरी उसे ननकू की दवा के लिए पैसे देता है, तो उसे उसकी नियत पर शक होता है। "आप इन्हें रहने दे, कुछ दिन बाद वह स्वयं आकर ले जायेगा।"५६ यह कहकर जैसे ही रक्खो वापस जाने के लिए मुड़ी, चौधरी ने उसकी बांह पकड ली और कहा, "ले जाओ, डरती क्यों हो?"५७ तभी साईस ने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया। यह देखते ही रक्खो की आंखे क्रोध से लाल हो गयी। खुरखुर करनेवाली मिसकिनी बिल्ली अब निर्भीक सिंहनी बन गयी। रक्खो ने एक बार बेबसी की आंखों से इधर उधर देखा और फिर इस जोर से चौधरी साहब को लात जमायी कि वह लुढ़कते हुए चारपाई पर जा पडे और रक्खो ने हांफते हुए कहा, "खुदा ने धनी निर्धन में इज्ज़त का एक-सा अहसास पैदा किया है। गरीबों को भी अपनी इज्ज़त उतनी ही प्यारी है,जितनी अमीरों को।"५८ साईस ने डरकर दरवाजा खोल दिया और रक्खो भाग गयी।

रक्खो सामाजिक कुरीतियों के विरुध्द विद्रोह करती है। चरस पीने वाले पति का विरोध कर उसे रास्ते पर ले आती है। समाज में अपने आपको प्रतिष्ठित कहलानेवाले चौधरी रक्खो जैसी निर्धन स्त्री की ओर जब बुरी नज़रों से देखने का साहस करता है, तब वह उनका प्रतिकार करती है। रक्खो इतनी साहसी है कि वह इस घटना के बाद दूसरे दिन चौधरी के घर पानी भरने जाती है, पर चौधरी उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते। इतना ही नहीं, अगले दिन अपने नौकर हमीद को दस रुपये के साथ ननकू का हाल पूछने के लिए भेज देते हैं। जब तक ननकू पूरी तरह अच्छा न हो जाय, उसे काम पर आने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार हम देखते हैं कि रक्खो ने अपने दृढ चरित्र के माध्यम से दो बिगडी हुए व्यक्तियों को लगभग सुधार दिया। उसने अपने चरित्र के द्वारा यह सिध्द कर दिया कि अबला कहलानेवाली नारी परिस्थिति आने पर सबला बनकर अन्याय का डटकर विरोध कर सकती है।

'झाग और मुस्कान' कहानी की नायिका लल्लन का पति हरिया - एकदम निकम्मा, शराबी और जुआरी है। घर का पूरा खर्च लल्लन को अपनी ही तनख्वाह से

चलाना पडता है। हरिया उसे फूटी कौड़ी भी नहीं देता, उल्टा उसीसे मांगता रहता है। पैसे न देने पर लल्लन को मारता भी है। लल्लन मेहतरीन होने पर भी साफ सुथरी रहती है। उसे गंदा रहना अच्छा नहीं लगता। उसके आकर्षक व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए प्रो. मलहोत्रा कहते हैं, - " गोल चेहरे और बड़ी-बड़ी आंजन-मंजी आंखोंवाली, धोबी की धुलाई छपी साडी और रेशमी ब्लाऊज पहने, चांदी की हंसली और बुंदों में झमझम करती हुयी एक सांवले रंग की पतली छरहरी युवती। --- यह युवती अपनी श्यामलता के बावजूद अपने शरीर के गदाव, अपनी बड़ी-बड़ी आंखों के फैलाव, वस्त्रों के चुनाव और खड़े होने की कुछ अजब-सी भंगिमा के कारण -- सुंदर लगती थी।"५९

जब लल्लन चार बरस की थी, तभी उसकी शादी हो गयी थी। गौना आने के बाद वह पति के घर आयी थी। लेकिन उसका पति उसकी तुलना में एकदम निकम्मा था। हमेशा शराब के लिए पैसा मांगता है और न देने पर हाथ उठाता है। पर लल्लन चुपचाप मार खानेवाली औरत नहीं हैं। वह उसका मुंहतोड जबाब देती है।

"उसने बताया था कि जमादार - याने हरिया - एकदम निकम्मा, शराबी और जुआरी है। वह उनके यहां से जो पाती है, उसी से घर का खर्च चलाती है। वह तो अपनी तनख्वाह से कौडी भी नहीं देता।

'तुम्हारे बापने देख-भालकर न की थी शादी?'

'हम तो चार बरस के थे साब, जब हमारी सादी हो गयी थी। गौना अभी भया है।'

'तो क्या तुमको तनख्वाह भी नहीं देता?'

'देई का साब, उल्टा हमी से मांगता है। नहीं देते तो मारे दोडता है।'

'कहां उडाता है अपनी तनख्वाह?'

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

'एक ही हरामी है साब। दारु पियत है और जुआ खेलत है।' लल्लन ने कहा, 'कल हंसली मांगत रहा गिरवी रखने को। हमने इन्कार किया, तो उसने हंसली पर हाथ रखा। हम खाना पकावत रहे, चूल्हे से जलती लकडी हमने खींच ली कि हाथ हटाय ले, नहीं बांह तोड देंगे। तब लगा बांह छोडकर गरियाने।"६0

लल्लन में और हरिया में झगडा होता रहता है। हरिया दारु पीकर उसे मारता है, उसके गहने गिरवी रखना चाहता है। यह अन्याय लल्लन सह नहीं सकती। वह उसका प्रतिकार करना चाहती है। इसी कारण प्रो. मलहोत्रा से कहती है --

"'साबुन न उसे मलेंगे, जूता मारेंगे।' लल्लन बोली, 'ऐसे ही हमको तंग करेगा तो हम अपनी मां के उठ जायेंगे, पंचायत करेंगे और छुट्टी पायेंगे। --- साब, अपने भाग में जब सुख नहीं तो कहां मिली। हमारी जात में सब दारु पियत हैं, गरियावत हैं और मेहरारुन का पीटत है। आप साब, हमें छुट्टी दिलाय दे तो इहां आप लोगन की खिदमत करे।"६१

लल्लन के चरित्र के द्वारा अश्कजी यह स्पष्ट कर देना चाहते है कि लल्लन जैसी निपट गंवारन -- निरन्तर निरादर, अपमान सहते-सहते जब उब जाती है, तो विद्रोह का झंडा खड़ा कर देती है। पंचायत का दरवाजा खटखटाने के लिए तैय्यार हो जाती है। अपने उपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार, अनाचार के विरुध्द कमर कसके लड़ने को तैय्यार होती है।

लल्लन जैसी औरतें पुरुष के अन्याय का प्रतिकार करना चाहती हैं, बस उन्हें चाहिए किसी की मदद, सहारा। इसी कारण वह कहती है, "मेम साब हमारी कुछ मदद कर दे साब, तो हम उस हरामी से छुट्टी पाये।"६२

उसके ये उद्‌गार इस बात के द्योतक हैं कि लल्लन लडना चाहते हुए भी अपनी निरीहता तथा निर्बलता के कारण विद्रोह नहीं कर सकती। नारी को किसी के आधार की आवश्यकता है। जब लल्लन को यह सहारा मिल जाता है, तब वह हरिया जैसे

निकम्मे को भी इन्सान बनाती है।

परिवार रुपी गाडी मे पति-पत्नी का स्थान पहियों के समान है। जिस प्रकार समस्त गाडी का बोझ पहियों पर निर्भर रहता है, उनके दुर्बल होने से गाडी कठिनाई से ही आगे चल पाती है, वह जल्दी टूट जाती है, उसी प्रकार पति-पत्नी संबंध अच्छे न होने से, उनके अपने अपने कर्तव्य और दायित्व का पालन न करने से परिवार प्रसन्न नहीं रह सकता। वह एक दिन टूट कर ही रहता है। 'पाप का आरंभ' कहानी में ऐसे ही एक परिवार के टूटने का चित्रण किया है। शादी के बाद पति-पत्नी के आनंद का ठिकाना नहीं होता। पत्नी पति के व्यक्तित्व में अपने आप को भूला देती है। इसका वर्णन करते हुए लज्जा कहती है, "उनके प्रेम का उन्माद हर समय मुझे घेरे रहता । वे ऐसी बातें करते, जो मेरी समझ से परे होती। वे कहते, 'लज्जा ! ' और मैं उनकी ओर देखने लगती। उनके स्वर में कुछ ऐसा कंपन, ऐसी हकलाहट, कुछ ऐसा जादू होता कि मेरे तन मन में एक सिहरन-सी दौड जाती। उनकी आंखों मे कुछ ऐसी मस्ती होती और वे अचानक बेताब हो कर मुझे इस तरह पकड लेते के मैं डर-सी जाती। मेरी नस नस कांप सी उठती और फिर वे मुझे अपनी बाजुओं में भींच कर चूम लेते। लेकिन धीरे-धीरे मैं इन बातों की अभ्यस्त होती गयी। फिर मुझे इनमें कुछ अजीब सा रस भी मिलने लगा और फिर मैं स्वयं इनके लिए लालायित रहने लगी। न केवल यह, बल्कि मैं स्वयं इनमे पहल करने लगी।"६३

लेकिन यह स्थिति कुछ ही दिनों में बदल गयी। लज्जा के पति ने जिला बोर्ड गर्लस् स्कूल की हेडमिस्ट्रेस की सहाय्यता से लडकियों का स्कूल खोला। इन्हे रहने के लिए भी हेडमिस्ट्रेस ने जगह दी और यहीं से लज्जा के दुर्भाग्य की कहानी शुरु हुयी। लज्जा का पति अधिक समय इस हेडमिस्ट्रेस के साथ बिताता था, जिसे बीबीजी कहा गया है। लज्जा ने भी अपनी उदासी दूर करने के लिए बलवंत से

पढ़ना शुरु किया।

लज्जा नें मास्टरजी को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया, पर वह असफल रही। उसके मन में मास्टर जी और बीबी जी को लेकर संदेह हुआ और जब उसने अपनी आंखों से उन्हें एक साथ देखा, तो वह टूट गयी। वे और बीबीजी एक ही बिस्तर पर सोये हुए थे और बीबीजी का हाथ उनके गले में पडा था। यह दृश्य देखते ही लज्जा के सारे शरीर में आग सी लग गयी। उसे अपने आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। ईर्ष्या से उसकी आंखों पर खून उतर आया। 'जी में आया कि अभी जाकर पूछूं' इस पापाचार के लिए ढोंग की क्या आवश्यकता है। क्यों नहीं खुले - बन्दो प्रेम का बाजार गर्म किया जाता। पत्नी-पत्नी क्या कर सकती है -- संस्कारों, उपदेशों और धर्म की जंज़ीरों में जकडी हुयी वह अपने पति को बुराई की तरफ जानें से रोक नहीं सकती। पतिव्रता धर्म का तगादा है कि पति चाहे जो करे, पत्नी उसके किसी काम में दखल न दें। बल्कि अपनी शक्ति भर उसके सभी अच्छे और बुरे कामों में सहायता भी करें।"६४

रात की घटना के बारे में लज्जा जब मास्टरजी से पूछती है, तो वे साफ इनकार करतें हैं, बल्कि गुस्से में आ कर लज्जा को ही पीटते हैं। वैवाहिक जीवन में यह पहला अवसर था, जब लज्जा को पीटा गया। लेकिन मास्टरजी और बीबीजी का सिलसिला कम नहीं हुआ, बल्कि अब वे होटल में मिलने लगे। यह सब देखकर लज्जा के मन में विद्रोह की भावना जागने लगी। वह मन ही मन सोचने लगी, "इसी तरह दूसरी औरत के साथ रहना था, तो मुझे ब्याह कर क्यों लाये? ब्याह ही लाये थे, तो मुझे प्यार क्यों किया और इतना प्यार किया था तो फिर यह उपेक्षा, यह अपमान, यह दण्ड - ये क्यों ! --- पत्नी की स्थिति ही क्या है। वह कर ही क्या सकती है? पति चाहे तो उसे मार मार कर अधमरा कर दें, जिन्दा जमीन में गाड दें, घुल-घुल कर मरने के लिए छोड दें। चाहे तो उसके सामने मज़े उडाये। उसकी छाती पर मूंग दले।"६५ इतना

करने के बाद भी वह अपने आप को साधू कहलाता है और अपनी पत्नी को बदचलन।

जब लज्जा 'दिलकुशा' होटल के बारे में पूछती है, तो उसे डांटते हुए मास्टरजी कहते हैं, -- "मुझे मालूम न था कि तुम ने यों पंख निकाल लिए हैं। अभी तुमने खुद कहा कि मैं नें अपनी आंखों से सब कुछ देखा है। तो तुम रात के वक्त होटल में गयी। जाओ, होटलों में जाओ, कोठीखानों में जाओ, जहां मर्ज़ी हो जाओ। मैं कुछ नहीं बोलूंगा।"६६

मास्टरजी का यह लांछन सुनकर लज्जा सन्न रह गयी। उसके मन में विद्रोह की भावना जाग उठी। एक चोरी उपर से सीना-जोरी। मास्टरजी दूसरी औरत को साथ लेकर सारी रात होटल में रहते हैं, तो कोई बुरा नहीं करते और लज्जा अगर उसी होटल में उन को देखने चली गयी तो गजब हो गया। लज्जा अपने आप में परिवर्तन करना चाहती है। वह मास्टरजी को बताना चाहती है कि वह मामूली, कमजोर और कायर औरत नहीं है, जो मर्दों की जूती बनकर रहती है। जो उनके हर अच्छे और बुरे काम के आगे सिर झुका देती है। ऐसे ही समय बलवंत ने लज्जा को सहारा दिया। उसके एक प्यारभरे शब्द ने उसे जीने के लिए प्रेरित किया। "मैं मुस्करा दी और भूल गयी कि मैं दो दिन से भूखी हूं। भूल गयी कि मैं बहुत कमजोर हूं। भूल गयी कि मेरा सिर चकरा रहा है। उस वक्त जिस्म में नयी ताकत, नयी जिंदगी आ गयी -- ।"६७

लेकिन इस तरह पति के गुमराह होने के कारण पत्नी भी गुमराह होती रहेगी, तो विवाह संस्था का क्या होगा ?पूरी भारतीय समाज व्यवस्था टूट जायेगी।

पति द्वारा मिली हुयी उपेक्षा और अपमान के कारण ही लज्जा बलवंत की ओर आकर्षित हो जाती है। लज्जा के पतन के लिए उसका अपना पति ही जिम्मेदार है। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में पुरुष के इस अन्याय के विरुध्द विद्रोह करने की शक्ति अब नारी में दिखाई दे रही है, यही महत्वपूर्ण बात है।

नारी का व्यक्तित्व

व्यक्तित्व की पहचान ही मनुष्य की पहचान है। पुरुष की तरह स्त्री भी अपने स्वाभिमान की रक्षा करना चाहती है। वह भी अपने व्यक्तित्व के द्वारा अपने अस्तित्व को कायम करना चाहती है। जहां उसके व्यक्तित्व को ठोकर लगती है, वहां वह दूर हो जाती है। वह भी पुरुष से प्रेम करती है, लेकिन अपना व्यक्तित्व खोना नहीं चाहती। वह चाहती है कि उसे उसी रुप में स्वीकारा जाय जिस रुप में वह है। झूठी शान या झूटा परिचय देना वह अपमान मानती है। 'नज्जिया' कहानी की नायिका नज्जिया इसी प्रकार की नारी है। नज्जिया का जन्म भारत में हुआ था, लेकिन आजकल वह बगदाद (इराक) में अपने नृत्य से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करती थी। वही पर उसकी मुलाकात हसरत से होती है। नज्जिया का सौंदर्य, उसका नृत्य देखकर हसरत उसकी ओर आकर्षित होता है। दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। हसरत के कारण ही वह नृत्य करना छोड देती है, थियेटर जाना भी बंद करती है। कुछ दिनों के बाद जब हसरत भारत आनेवाला होता है, तब नज्जिया पूछती है , "हसरत, तुम्हारे घरवाले पूछेंगे - 'वह कौन है, तो क्या जबाब दोगे ?' इसका उत्तर देते हुए हसरत कहता है कि "कहूंगा, यह बगदाद के एक बडे उंचे घराने की कलाकार है। बहुत पहले वह घराना हिंदुस्थान से चला गया था। अब सागर की बूंद सागर में आ मिली है।"६८ अर्थात हसरत नज्जिया का वास्तविक परिचय देना नहीं चाहता। एक नर्तकी के रुप में वह नज्जिया को अपनाना नहीं चाहता। यह बात नज्जिया को अपमानजनक लगती है। वह जानती है कि नर्तकी की ओर समाज बुरी नजर से देखता है। इसी कारण वह जहां है, वहीं पर खुश है। अपने व्यक्तित्व की रक्षा करते हुए प्रेम को तिलांजली देती है। उसके स्वाभिमानी मन का प्रतिबिम्ब इस पत्र मे स्पष्ट रुप से झलक उठता है --

"हसरत, तुम भी मुझे इस हैसियत से भारत ले जाना नहीं चाहते। तुम्हारे

दिल में भी एक ऊँचे घराने की लड़की से शादी करने की तमन्ना है, एक रक्कासा के लिए वहां कोई जगह नहीं। तुम भी मेरे रुप से प्रेम करते हो, मेरी कला से नहीं, इसलिए विदा। तुम शुमाल में खडे हो, मैं जुनूब में। तुम ऊँचे घराने के चिराग हो, मैं एक छोटे वंस की शमा। जाति का ही नहीं, खयालात का ही नहीं, हम तुम में जमीन आसमान का फर्क है। इस मुहब्बत को जीवन की एक मामूली बात समझकर भूल जाना। ------ नज्जिया "६९

नारी का अहं

नारी में अहं की भावना पुरुष की तुलना में कुछ ज़्यादा होती है। अगर कोई उसकी उपेक्षा करता है, तो वह उसे अपना अपमान समझती है और इस अपमान का बदला लेना चाहती है। 'राजकुमार' कहानी की कुमुदिनी इसी अपमान की आग में जल रही है। राजनर्तकी कुमुदिनी की मधुर स्वर-लहरों की तरंगों में सारी राजसभा डूब जाती थी, पर राजकुमार जैसे सूखे तट पर खडा तकता रहता था। प्राय: वह उसके नृत्यगान को अधूरा ही छोड कर चला जाता था। "कुमुदिनी जब कभी सभा में गाने के लिए आती थी, आसपास की रियासतों के राजकुमार उसे एक नजर देखने के लिए उमड पडते थे। उसकी एक-एक तान पर झूम उठते थे। लेकिन राजकुमार पर उसका कुछ भी प्रभाव न पडता। अमृतमय भागीरथी पास में बहती रही थी, लोग दूर-दूर से आकर उसमें गोते लगाते थे, पर उसके पास रहनेवाला कभी भूल कर भी एक चुल्लू पानी न लेता था।"७० इस तरह नृत्य के समय भरी सभा से राजकुमार का चला जाना कुमुदिनी के लिए अपमानजनक था। इसका वर्णन करते हुए लेखक लिखता है, "जब कभी राजकुमार राग-रंग की सभा को, कुमुदिनी के गाने को बीच ही छोडकर चल देता तो क्रोध से नर्तकी का मुख आरक्त हो उठता। किन्तु फिर उस पर सफेदी छा जाती। उसका पराजित स्त्रीत्व अभिमान से सर उठता है, पर क्षण भर में फिर बैठ जाता जैसे चोट लगने पर नाग फन उठाकर फुफकार

उठता है, लेकिन फिर चोट की पीड़ा से व्याकुल होकर गिर जाता है। लोग उसके मधुर कंठ की प्रशंसा करते, उसकी हर भावभंगिमा पर बलि-बलि जाते, पर कुमुदिनी को यह सब जरा भी न भाता था। अमृत वांछा रखने वाले को यदि सागर का खारा पानी मिले, तो वह उससे मुंह न फेर ले तो और क्या करे।"७१

इस अपमान और उपेक्षा के कारण कुमुदिनी अंदर ही अंदर जल रही थी। वह एक बार राजकुमार के अभिमान को चकनाचूर करना चाहती है। जितना ही वह राजकुमार के बारे में सोचती, उसका अहम् उस पर विजय प्राप्त करने के लिए आकुल हो उठता।

एक दिन कुमुदिनी राजकुमार से मिलकर उसके आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करने की इच्छा प्रकट करती है। वह इतनी भावविव्हल हो जाती है कि अपने आपको सम्हाल नहीं पाती। राजकुमार से मुक्ति का मार्ग प्राप्त करने का वादा करते हुए चली जाती है। जाते समय कुमुदिनी के ओठों पर विजय भरी मुस्कान थिरक रही थी। उसका मुख खिल पडा था। कुमुदिनी तो चली गयी पर राजकुमार अपने आपको सम्हाल नहीं सका। उसे किताब के प्रत्येक शब्द में कुमुदिनी की छबी दिखाई देने लगी। उसने तंग आकर किताबों को आग लगा दी। सुबह जब कुमुदिनी राजकुमार से मिलने आयी, तो उसने देखा, महल जल रहा है और राजकुमार का कहीं पता नहीं। वह घने वनों में खो चुका था।"७२ इस प्रकार राजनर्तकी कुमुदिनी अपने अपमान का बदला लेती है, जिससे उसके अहं की पुष्टि होती है।

:-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!

--- संदर्भ ---

१)	सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ -	उपेन्द्रनाथ अश्क	पृ. ५८०
२)	पलंग -	"	पृ. १३
३)	वही -	"	पृ. १५
४)	वही -	"	पृ. १६
५)	वही -	"	पृ. १८
६)	वही -	"	पृ. २०-२१
७)	वही -	"	पृ. २१
८)	वही -	"	पृ. ३३
९)	वही -	"	पृ. ३३
१०)	सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ -	अश्क	पृ. ३९१
११)	अश्क साहित्य धारा - १ (चौतिस कहानियाँ)	"	पृ. १०५
१२)	वही -	"	पृ. २५५
१३)	वही -	"	पृ. २५६
१४)	वही -	"	पृ. २५७
१५)	वही -	"	पृ. २२६
१६)	वही -	"	पृ. २३२
१७)	जुदाई की शाम का गीत-	अश्क	पृ. १२८
१८)	वही -	"	पृ. १२७
१९)	वही -	"	पृ. १३९
२०)	सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ -	अश्क	पृ. ३६३

२१) सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ -	अश्क	पृ. ३६८
२२) वही -	"	पृ. ३६८
२३) वही -	"	पृ. ३७०
२४) वही -	"	पृ. ३७२
२५) वही -	"	पृ. ५११
२६) वही -	"	पृ. ५१३
२७) वही -	"	पृ. ५१३
२८) वही -	"	पृ. ५१५
२९) वही -	"	पृ. ५५५
३०) वही -	"	पृ. २१२
३१) वही -	"	पृ. २१८
३२) पलंग -	अश्क	पृ. २८
३३) वही -	"	पृ. २८
३४) वही -	"	पृ. ३०
३५) वही -	"	पृ. ३०
३६) वही -	"	पृ. ३१
३७) वही -	"	
३८) अश्क साहित्य धारा - १ (चौतिस कहानियाँ)	अश्क	पृ.३१-३२
३९) सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ -	अश्क	पृ. ४८२
४०) वही -	"	पृ. ४८८-४८९
४१) वही -	"	पृ. ३९८
४२) वही -	"	पृ. ५०२

४३)	सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ -	अश्क	पृ. ५०४
४४)	वही -	"	पृ. ४३१
४५)	वही -	"	पृ. ४४१
४६)	वही -	"	पृ. ४४२
४७)	वही -	"	पृ. ४४५
४८)	वही -	"	पृ. ११-१२
४९)	वही -	"	पृ. ५८०
५०)	वही -	"	पृ. ५८०
५१)	पलंग -	अश्क	पृ. १४५
५२)	वही -	"	पृ. १६०
५३)	वही -	"	पृ. १६१,१६२,१६३
५४)	सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ	अश्क	पृ. ४८२
५५)	वही -	"	पृ. ४८४
५६)	वही -	"	पृ. ४८८
५७)	वही -	"	पृ. ४८८
५८)	वही -	"	पृ. ४८९
५९)	पलंग -	अश्क	पृ. ४०
६०)	वही -	"	पृ. ४४
६१)	वही -	"	पृ. ५१
६२)	वही -	"	पृ. ५१
६३)	अश्क साहित्य धारा -१ (चौतिस कहानियाँ)	अश्क	पृ. ३७

६४)	अश्क साहित्य धारा - १ (चौतिस कहानियाँ)	अश्क	पृ. ४०
६५)	वही -	"	पृ. ५०
६६)	वही -	"	पृ. ५१
६७)	वही -	"	पृ. ५७
६८)	सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ -	अश्क	पृ. ३६१
६९)	वही -	"	पृ. ३६१-३६२
७०)	अश्क साहित्य धारा - १ (चौतिस कहानियाँ)	अश्क	पृ. १३३
७१)	वही -	"	पृ. १३३
७२)	वही -	"	पृ. १४१

* * * * * * * * *